

ੴ



ਸ੍ਰੀ ਮਹਾਂ-ਸੁਰ-ਸਫ਼ਰ-ਰੁਗਵਧ-ਪਰਮ੍ਹਾਗਤ-ਮੁਲਾਧਾਧ-ਮਥਲ-
ਪੀਠਮਾ

ਸ੍ਰੀ-ਕਾਠੀ-ਕਾਮਕੋਟਿ-ਪੀਠਮਾ
ਏਗਯੁਰ-ਸ੍ਰੀ-ਸਫ਼ਰਾਧਾਟ-ਧਾਮਿ-ਸ੍ਰੀਮਠ-ਮੰਮੂਨਮਾ

ਸ੍ਰੀਮਤਾ-ਸਫ਼ਰ-ਰੁਗਵਧ-ਮਰੁਮ੍ਹਾਧਾਵਲਿ:

1. ਸ੍ਰੀਗੁਰਵੇ ਨਮ:
2. ਸੁਰੂਧਾਧ ਨਮ:
3. ਸ੍ਵੇਮੇ ਨਮ:
4. ਸਾਧਾਧ ਨਮ:
5. ਧਾਨਿਧੇ ਨਮ:
6. ਧਾਧਾਧ ਨਮ:
7. ਤਿਤਿਧੇ ਨਮ:
8. ਧਾਧਾਧ ਨਮ:
9. ਰੁਮੁਕਮ੍ਹੇ ਨਮ:
10. ਮਮਾਧਿਧਾਧ ਨਮ:
11. ਧਾਧਾਧ ਨਮ:
12. ਧਾਧਿਧਾਧ ਨਮ:

13. મ્દુળાનાથ નમઃ
14. ણિરતુનાથ નમઃ
15. ણાપલાથ નમઃ
16. ણુરમૈત્રુથ નમઃ
17. ણરિત્વૃકૈવિદ્થ નમઃ
18. ણુરુથ નમઃ
19. મૂઠિભૈલિભૂથ નમઃ
20. મિદાથ નમઃ
21. મુદ્ધપ્ઠેઠકાથ નમઃ
22. વમિતે નમઃ
23. વિશ્વેશ્વરાથ નમઃ
24. મ્નાપ્તાથ નમઃ
25. મ્મભૃતાથ નમઃ
26. મ્મલકૃતે નમઃ
27. મ્મીપિતે નમઃ
28. મ્મુત્તાદિધિકૃથ નમઃ
29. મ્મવૈમાથ નમઃ
30. મ્મલાદૈવાથ નમઃ
31. મ્મદ્મભદ્માથ નમઃ
32. રુદાથ નમઃ
33. રુદ્ધાથ નમઃ
34. રુદાથ નમઃ
35. મ્મુગ્ધાથ નમઃ

36. મન્વાય નમઃ
37. રૈમાનાય નમઃ
38. રૈશ્વરાય નમઃ
39. મૈમાય નમઃ
40. મૃષિકૃતૈ નમઃ
41. મૃમાય નમઃ
42. મિમાય નમઃ
43. મૃલ્લવૈ નમઃ
44. મૃગાચિત્તાય નમઃ
45. મામૃતાય નમઃ
46. મૈમૃગનાય નમઃ
47. મિમૃષૈગિનિષેવિતાય નમઃ
48. મૈમાય નમઃ
49. મૃગામૃગુત્તરવૈ નમઃ
50. મૃમૈતૈ નમઃ
51. પૈયમે નમઃ
52. અગદ્ગુત્તરૈ નમઃ
53. મૃકૃતૈ નમઃ
54. મિત્તવાદ્મૃતૈ નમઃ
55. મામૃતાય નમઃ
56. મહુરગિનાય નમઃ
57. વીરાય નમઃ
58. મુરુવિનારિલૈ નમઃ

59. सुम्भ्रैकृभृतिभते नमः
60. मृपिलाय नमः
61. मृपिलःभृय नमः
62. रुडाङ्गने नमः
63. रुडकुते नमः
64. विरुवे नमः
65. मुल्लकुते नमः
66. मभरीष्टेगिने नमः
67. कलिखीउभृगिड्डाय नमः
68. गुलाःमिने नमः
69. गुलागेकिने नमः
70. विप्लुरद्विःमकुते नमः
71. गुलाय नमः
72. गुलामयाय नमः
73. गुलाय नमः
74. रुगिःय नमः
75. रुडिकुते नमः
76. वृणाय नमः
77. रुडुङ्गय नमः
78. रुडिरुते नमः
79. रुडुः नमः
80. रुडैमाय नमः
81. रुडुःवनाय नमः

82. ਰੁਦ੍ਰਾਥ ਨਮਃ
83. ਰੁਦ੍ਰਾਥ ਨਮਃ
84. ਰੁਵਰਿਖਣਿ ਨਮਃ
85. ਰੁਕੁਪ੍ਰਣਾਥ ਨਮਃ
86. ਪਿਨਾਕਰੁਤੋ ਨਮਃ
87. ਮਘਲਾਭੁਜੋ ਨਮਃ
88. ਮਘਰਵਾਯੋ ਨਮਃ
89. ਮਿਤ੍ਰਾਥ ਨਮਃ
90. ਮਾਤ੍ਰਾਥ ਨਮਃ
91. ਮਧਵੋ ਨਮਃ
92. ਮੁਨਥੋ ਨਮਃ
93. ਮਨਾਤੋਯੋ ਨਮਃ
94. ਮਨਿਤਵਾਯੋ ਨਮਃ
95. ਸ਼ਲਫ਼ਾਥ ਨਮਃ
96. ਸ਼ਮਲਾਥ ਨਮਃ
97. ਸ਼ਨਯਾਥ ਨਮਃ
98. ਸ਼ਲਾਥ ਨਮਃ
99. ਸ਼ਲੈਖਣਮੁਕੁਥਾਥ ਨਮਃ
100. ਸ਼ੁਟ੍ਰੁਵੋ ਨਮਃ
101. ਸ਼ੁਟ੍ਰੁਮੰਥਾਥ ਨਮਃ
102. ਸ਼ੀਲਿਨੋ ਨਮਃ
103. ਸਿਵਗੁਰੁਪ੍ਰਥਾਥ ਨਮਃ
104. ਸ਼ੁਟ੍ਰੁਭ੍ਰਮੁਪ੍ਰਥੈ ਨਮਃ

105. મિત્રાય નમઃ
106. પરાક્રમાય નમઃ
107. રૂપિંમદ્દેવિવમુખવૃદ્ધાય નમઃ
108. ઉદ્ધરણિયે નમઃ
109. મટુરુપાય નમઃ
110. કાલણીનનાય નમઃ
111. મુદ્ધયાય નમઃ
112. વિદ્યુપતયે નમઃ
113. વદૈ નમઃ
114. વૈદ્યે નમઃ
115. ગિન્નયાય નમઃ
116. પ્રલિકાપિયાય નમઃ
117. મીમારુદ્ધિગારુદ્ધાય નમઃ
118. મૈત્રેયિયે નમઃ
119. મિત્રેમિકાય નમઃ
120. મીમાપાય નમઃ
121. મીનરાય નમઃ
122. મુખિલ્ નમઃ
123. મામિરુ નમઃ
124. મુદ્ધયે નમઃ
125. ઉદ્ધલાય નમઃ
126. માળવૈ નમઃ
127. મૈત્રેયે નમઃ

128. मंविचंमवै नमः
129. मरिण्डपुत्रविगुणाय नमः
130. गुरुगुरुवृणलवृपुममृममृउवै नमः
131. मृमृमृय नमः
132. मंयमिने नमः
133. पृथिलि नमः
134. मंभारगुगउदुगय नमः
135. मृत्तिपुत्रे नमः
136. मृदुगैविनुय नमः
137. पृथिगुय नमः
138. पृपुमङ्गुवै नमः
139. मृभेमिने नमः
140. निगभात्रुल्लय नमः
141. एकाननूरभाङ्गकाय नमः
142. मीरुमउवृपृउ नमः
143. एकमृय नमः
144. कषायरुत्रे नमः
145. रुकुपुपुमृमृय नमः
146. गैविनुगवद्विषाय नमः
147. रुमिभरुद्वारिलि नमः
148. मृपृगैरुपमृय नमः
149. भाउङ्गमीभरुदेवीवैकुभृपिउमन्नुय नमः
150. वडिडीरुमिपुटुममृयपुवगुकाय नमः

174. गु॒रु॒तु॒भा॒य न॒मः
175. गु॒रु॒रा॒ए॒य न॒मः
176. गु॒लि॒ने॒ न॒मः
177. गे॒प्रे॒ न॒मः
178. गे॒प॒ना॒य न॒मः
179. न॒रा॒कु॒उ॒ये॒ न॒मः
180. नि॒म्न॒भा॒य न॒मः
181. न॒रा॒का॒रा॒उ॒ये॒ न॒मः
182. न॒भृ॒य न॒मः
183. ना॒षा॒य न॒मः
184. नि॒र॒ह्म॒ना॒य न॒मः
185. नि॒भृ॒ला॒य न॒मः
186. नि॒धृ॒ला॒य न॒मः
187. नि॒ष्टृ॒य न॒मः
188. ना॒भ॒रु॒प॒वि॒वे॒क॒व॒उ॒ न॒मः
189. ना॒ली॒का॒य न॒मः
190. नि॒धि॒या॒य न॒मः
191. नी॒रु॒ए॒ न॒मः
192. नि॒रा॒मि॒धे॒ न॒मः
193. नि॒रा॒भ॒या॒य न॒मः
194. नि॒त्र॒उ॒ये॒ न॒मः
195. निः॒श्रृ॒ण॒का॒रा॒य न॒मः
196. निः॒श्रृ॒ला॒कु॒उ॒ न॒मः

197. તિરીશ્વરાય નમઃ
198. તીરુપકાચ નમઃ
199. તિરુલ્લય નમઃ
200. તિરુમ્મલ નમઃ
201. તિરુવાય નમઃ
202. વમિતે નમઃ
203. તિલ્લેપાય નમઃ
204. તિરુપુક્કાય નમઃ
205. રુક્માય નમઃ
206. રુક્મણનામ્બાય નમઃ
207. માલઝ્ઞારિલ નમઃ
208. મરિણનાય નમઃ
209. મુરચે નમઃ
210. માચક્કુલાય નમઃ
211. ચમિતે નમઃ
212. મત્તે નમઃ
213. માઝ્ઞત્તે નમઃ
214. માઝ્ઞિકાય નમઃ
215. મઠ્ઠાય નમઃ
216. મવમિઝ્ઞાય નમઃ
217. મુરારુકાય નમઃ
218. મમિધ્રાય નમઃ
219. મઝ્ઞિલ નમઃ

220. દૃઘમે નમઃ
221. ઘલિતે નમઃ
222. ઘણિતે નમઃ
223. મિતેક્રિતૃતે નમઃ
224. ઘાંચમાય નમઃ
225. ઘરિષ્ઠાય નમઃ
226. ઘાપ્તાપ્તાધિકાપદૈ નમઃ
227. પરમાય નમઃ
228. પરિહૃતે નમઃ
229. પૈષ્ઠાય નમઃ
230. પાલ્લય નમઃ
231. પીઠાય નમઃ
232. પિંચવદાય નમઃ
233. પાત્તિતે નમઃ
234. પદ્મચૈતિતે નમઃ
235. પક્ષાય નમઃ
236. પ્સનિરુપાનય નમઃ
237. પારક્ષાય નમઃ
238. પામમુક્તાય નમઃ
239. પરવિદે નમઃ
240. પટ્ટગીલિતૃતે નમઃ
241. મણિષ્ઠાવિદે નમઃ
242. મટ્ટાય નમઃ

243. ાકવા઼િતે નમઃ
244. ષ્ઠામ઼ા઼ય નમઃ
245. ધ્રુવે નમઃ
246. ધ્રુવે નમઃ
247. વિરુવે નમઃ
248. મૈત્રિવે નમઃ
249. ધ્રુવકામા઼ય નમઃ
250. ધ્રુવધ્રુવે નમઃ
251. મરુતે નમઃ
252. મરુપા઼ય નમઃ
253. મરુકા઼ય નમઃ
254. પર્મૈ઼દિતિવે નમઃ
255. પર્મૈ઼પદા઼ય નમઃ
256. પર્મૈ઼પદા઼ય નમઃ
257. પર્મૈ઼કા઼ઠાયે નમઃ
258. પર્મૈ઼મૈ઼ત્રે નમઃ
259. પર્મૈ઼ગૈ઼ત્રે નમઃ
260. પર્મૈ઼ઠકમે નમઃ
261. પર્મૈ઼વધુતે નમઃ
262. પર્મૈ઼વદ્ધત્તે નમઃ
263. પર્મૈ઼પુરે નમઃ
264. પર્મૈ઼વદ્ધત્તે નમઃ
265. પર્મૈ઼ઠા઼વા઼ય નમઃ

266. पुमाकुङ्कने नमः
267. पुमाङ्काय नमः
268. पुल्लनभनभुञ्जे नमः
269. पुमाभु नमः
270. पुट्टगङ्गवते नमः
271. विहङ्गे नमः
272. विम्वरुते नमः
273. वेण्मै नमः
274. वेङ्गेवैम्वरुवैरुवाय नमः
275. मट्टवडाय नमः
276. मट्टपराय नमः
277. डिमट्टाय नमः
278. मट्टनायकाय नमः
279. मट्टपुडिङ्गाय नमः
280. मट्टमिषे नमः
281. मट्टगुप्फकाय नमः
282. मभाय नमः
283. रैङ्गिङ्गे नमः
284. मसिङ्गननुभुरुपाय नमः
285. मङ्गमङ्गनाय नमः
286. मट्टुरुपाय नमः
287. मट्टमंभुय नमः
288. नगैमाय नमः

289. ऋभानिउय नमः
290. नरन्निउय नमः
291. नभय नमः
292. नरीनरनवाकुउय नमः
293. वृभल्लिनिवाग्नि नमः
294. मरन्निविनि नमः
295. मभिने नमः
296. भुरेश्वरान्निभ्राम्भय नमः
297. भुरिकेभरिल नमः
298. मङ्गिउन्निवृत्तुत्तुवैदिकवत्तुत्तु नमः
299. कुकुलानलकुम्भकुमारिलकुतानउय नमः
300. कुत्तुककुम्भकुम्भुलिमाय नमः
301. कविकेभरिल नमः
302. कुवन्निभन्निभ्रुपञ्चाभृय नमः
303. कलिनमनाय नमः
304. वैगरीगरुनाय नमः
305. भाभ्रुभ्रुवत्तु नमः
306. मभिउत्तुत्तुय नमः
307. एउल्लेनपुत्तिभ्रुभ्रुनेष्टाएनाभनवे नमः
308. वैमधिकविमधेकिविमधेविमधेय नमः
309. निरभ्रुत्तिभ्रुत्तुमैवरागवत्तुगभाय नमः
310. कालीनगरनिम्भ्रुम्भ्रुमेनन्निपात्तिउय नमः
311. वरन्निनयनिम्भ्रु नमः

312. ण॒कभ॒न॒ष॒प॒ट्टे॒स॒रा॒य न॒मः
313. गु॒ण॒भृ॒णि॒ङ्क॒ला॒ण॒भृ॒ण॒प॒ण॒ना॒य न॒मः
314. क॒ला॒प॒ण॒ना॒य न॒मः
315. क॒भ॒कै॒धृ॒ण॒रा॒क्षी॒रा॒य न॒मः
316. क॒भ॒कै॒दि॒प॒ण॒म॒या॒य न॒मः
317. क॒भ॒ा॒बी॒व॒रि॒व॒भृ॒कृ॒ते न॒मः
318. क॒ल॒रु॒भी॒स्र॒रा॒क्ष॒ना॒य न॒मः
319. क्लृ॒भे॒पा॒न॒भृ॒प॒मे॒धा॒ण॒ल॒मि॒रः॒प॒ण॒य न॒मः
320. णि॒वृ॒य न॒मः
321. णी॒वृ॒धृ॒व॒क्ष॒मे न॒मः
322. णी॒न॒र॒क्षि॒त् न॒मः
323. ण॒रा॒प॒ण॒य न॒मः
324. णै॒व॒णै॒वा॒य न॒मः
325. णी॒न॒ग॒त्र॒वे न॒मः
326. ण॒वि॒डा॒य न॒मः
327. णी॒न॒ट्टै॒वृ॒रु॒ते न॒मः
328. णै॒ध॒ण॒रा॒य न॒मः
329. ण॒धृ॒णि॒प॒वे न॒मः
330. ण॒वा॒मः॒स्रा॒भि॒डा॒य न॒मः
331. ण॒ण॒रा॒य न॒मः
332. ण॒वि॒ण॒ण॒धृ॒ण॒ण॒ण॒गि॒ने न॒मः
333. णै॒ध॒ण॒य न॒मः
334. ण॒ण॒ण॒म॒ना॒य न॒मः

335. दीर्घमित्रे नमः
336. दीर्घमित्राय नमः
337. दीर्घमित्राय नमः
338. दीर्घे नमः
339. दीर्घमित्रे नमः
340. विभूतैर्देवैरुवाच नमः
341. विभूतैर्देवैरुवाच नमः
342. कैलासमेविने नमः
343. गङ्गीनगराय नमः
344. कामरूपान्तरे नमः
345. मकराभाय नमः
346. कामरीश्वरमेवकाय नमः
347. मवर्तीश्वरकायेष्टाभायाकास्त्रीभलीप्रियाय नमः
348. कालीभक्तेश्वरेश्वरीप्रियाय नमः
349. मीमैलेमण्णवृषभपुत्रेभलीभगाय नमः
350. दुर्भक्तेश्वरीविभूतभिलीमेवनापराय नमः
351. मेरुकुतुभारीगाय नमः
352. एनान्नएनान्तिने नमः
353. मन्त्रपुरवैद्याध्वपाणलपद्मयाय नमः
354. कालीकलत्राय नमः
355. कलत्राय नमः
356. मन्त्रपुराणीयगाय नमः
357. कलत्रपुराणीयगाय नमः

358. मीनीपडित्वतृणैः ऋषाभैः उवनाम्नाय नमः
359. भानुमीरङ्गभण्डनमायिप्रणामाय नमः
360. मणिपलाङ्कमृगीरङ्गताण्डुलमुषतृणैः नमः
361. काङ्क्षीगुणमूढतृणतृणपरिभृताय नमः
362. रुभुपुष्पैः निलाकामलिङ्गमेवाण्डाण्डाय नमः
363. मनुवृत्तमुलभायिने नमः
364. काभकैः निभण्डाय नमः
365. गिरभृमभृतृमुभैः लिङ्गय नमः
366. मलिङ्गकाय नमः
367. तृमृङ्गमभृमुभैः लिङ्गय नमः
368. तृभृगिरि नमः
369. मारणभानुमन्त्रेणाय नमः
370. मवृद्धाय नमः
371. मवृषापतृ नमः
372. मारणभण्डपुमारणपीणवनाय नमः
373. मारणभृपतापुतृमृङ्गगिरिभृताय नमः
374. ममरीरवणैः वृद्धकाभकैः निभण्डाय नमः
375. काभकैः निभण्डपीणमृण्डमृभण्डाय नमः
376. कालभृताय नमः
377. काभण्डाय नमः
378. काभृताय नमः
379. मारणमृण्डाय नमः
380. काभकैः निभण्डाय नमः

381. ਕਮ੍ਮਨ੍ਨਿਕੁਲਮੋਪਯਾਥ ਨਮਃ
382. ਸਿਖੁਮਛਪਰਲ੍ਲਨਵਤਤੀਟਿਰੁਪ੍ਪਯਾਥ ਨਮਃ
383. ਮਠਾਥਾਥਮਠਾਥਾਥਮੋਤੁਕੈਰਲਠਮ੍ਮਕੁਤੇ ਨਮਃ
384. ਪੁਟ੍ਤਤਤੀਨ੍ਨਪ੍ਪਮਾਪਸਿਖੁਗਮਵਿਵੇਠਨਾਥ ਨਮਃ
385. ਸੁਨਨ੍ਨੋਨ੍ਨੁਠਿਠਾਪੁਵਮਰਸ਼ੁਟੁਕੁਥਾਗਮਾਥ ਨਮਃ
386. ਸੁਨਨ੍ਨਮਥਲ੍ਲਨਨ੍ਨਿਵਾਸੁਥਾਪੁਤਵਾਕੁਪ੍ਪਯਾਥ ਨਮਃ
387. ਥੈਗੇਸ਼੍ਵਰਾਚ੍ਚਾਨਿਰਤਾਥ ਨਮਃ
388. ਥੈਗੁਥਾਥ ਨਮਃ
389. ਥੈਗਵਿਯੰ ਵਰਾਥ ਨਮਃ
390. ਮੁਖਿਤਾਥ ਨਮਃ
391. ਮੁਖਿਗਾਥ ਨਮਃ
392. ਖਿਗੁਥਾਥ ਨਮਃ
393. ਮੁਮ੍ਮਵੈ ਨਮਃ
394. ਮੁਸ਼ੈ ਨਮਃ
395. ਮਿਤਿਪ੍ਪਯਾਥ ਨਮਃ
396. ਮਟੁਵਤਪਪ੍ਪਾਪੁਰ੍ਰਕੀਰਾਵਾਥ ਨਮਃ
397. ਸਮਰੀਰਵਤੇ ਨਮਃ
398. ਸੁਮੁਰਪਾਰਮੰਮਾਰਪਾਰਤਾਰਕੁਤੁਰਥੈ ਨਮਃ
399. ਕੁਤੁਰਿਵਜ੍ਜਮੰਮਾਤੁਖਾਤੁਲਕੁਖੁਵੈਰੁਵਾਥ ਨਮਃ
400. ਸਨਾਤੁਰਾਥ ਨਮਃ
401. ਸਤੁਲਿਤਾਥ ਨਮਃ
402. ਮਸ਼ੁਤੁਰਾਥ ਨਮਃ
403. ਮਾਪੁਲ੍ਲਜਨਾਥ ਨਮਃ

404. ધરુમનીપારદ્વૈ નમઃ
405. ધરુષ્ટાડીતમાનમાય નમઃ
406. ઘટેધાય નમઃ
407. દ્વલ્લયાય નમઃ
408. ઘડનાય નમઃ
409. દ્વત્તદ્વય નમઃ
410. ઘપુનરુદ્ધાય નમઃ
411. મુદ્ધાય નમઃ
412. રુદ્ધાય નમઃ
413. પુદ્ધાદ્વૈ નમઃ
414. મિદ્ધાય નમઃ
415. પેદ્ધાય નમઃ
416. મમુદ્ધાય નમઃ
417. મમિદ્ધાય નમઃ
418. પ્તિદ્ધાય નમઃ
419. મારદ્ધાય નમઃ
420. મવમામુદ્ધાય નમઃ
421. મુદ્ધાદ્વૈ નમઃ
422. મુદ્ધાદ્વૈ નમઃ
423. મેદ્ધાય નમઃ
424. મદ્ધાય નમઃ
425. મદ્ધાય નમઃ
426. મદ્ધાય નમઃ

427. ਮਨਮੁਖਯੋ ਨਮਃ
428. ਮਨੁਜੀਯਾਥ ਨਮਃ
429. ਮਨਮਧੁਯੋ ਨਮਃ
430. ਮਾਨਨਾਯੋ ਨਮਃ
431. ਮਨੁਕ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
432. ਮਾਥਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
433. ਸ਼੍ਰੇਣਿਯੋ ਨਮਃ
434. ਮਨਮਧੁਲਪਿਯੋ ਨਮਃ
435. ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
436. ਥਥਾਪ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
437. ਰਵੀਨੁਯੋ ਨਮਃ
438. ਰੋਮਨੋਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
439. ਰਮਯੋ ਨਮਃ
440. ਰਮਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
441. ਰਾਗਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
442. ਮਨੁਯੋ ਨਮਃ
443. ਰਾਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
444. ਸੁਪ੍ਰਕਾਯੋ ਨਮਃ
445. ਨਿਰਮਾਯੋ ਨਮਃ
446. ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
447. ਕਾਮਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
448. ਕਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ
449. ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਮਾਤ੍ਰਿਯੋ ਨਮਃ

450. भ॒ण॒राणीम॒भानि॒ताय॑ नमः
 451. ण्णै॒तिःपु॒रैमवि॒त॒ताय॑ नमः
 452. पा॒रै॒ए॒वपु॒रभि॒त॒ताय॑ नमः
 453. वि॒रु॒पा॒रु॒भु॒ला॒मे॒वि॒ने॒ नमः
 454. वि॒ए॒या॒पृ॒पु॒री॒ण॒राय॑ नमः
 455. वि॒मि॒मा॒मि॒मवि॒रु॒ताय॑ नमः
 456. वि॒मृ॒ता॒ष॒प॒पि॒याय॑ नमः
 457. पा॒ए॒ली॒पु॒त्रं॒भू॒ताय॑ नमः
 458. वि॒धू॒पा॒प॒मे॒व॒ताय॑ नमः
 459. ग॒या॒व॒ए॒भु॒ल॒भू॒ताय॑ नमः
 460. रु॒द्र॒ण॒ल॒नि॒रु॒ण॒ण॒ये॒ नमः
 461. वृ॒त्र॒व॒ता॒त्रु॒म॒स्त॒रि॒ले॒ नमः
 462. वृ॒भा॒ण॒ल॒गि॒ला॒म॒याय॑ नमः
 463. उ॒ङ्क॒र॒कु॒ण॒वि॒रु॒ताय॑ नमः
 464. भ॒लि॒का॒रु॒न॒भ॒ण॒ण॒ये॒ नमः
 465. मी॒प॒स्त॒न॒प॒स्त॒मृ॒मि॒धृ॒ध॒नि॒धे॒वि॒ताय॑ नमः
 466. मृ॒दे॒वि॒ल॒गु॒रा॒रा॒भाय॑ नमः
 467. क॒भ॒ला॒राय॑ नमः
 468. क॒ला॒नि॒ण॒ये॒ नमः
 469. क॒लि॒प्रं॒भि॒ने॒ नमः
 470. क॒भ॒रु॒पाय॑ नमः
 471. क॒भ॒ण॒राय॑ नमः
 472. क॒ला॒भ॒याय॑ नमः

473. परमेश्वर नमः
474. वसुधैव कुटुम्बकम् नमः
475. कामाक्षीमठेश्वर नमः
476. पूज्य नमः
477. पूज्य नमः
478. पूज्य नमः
479. भवतु भवतु भवतु नमः
480. भवतु भवतु नमः
481. नमः भवतु नमः
482. पूज्य नमः
483. सुभक्त नमः
484. सुभक्त नमः
485. सुभक्त नमः
486. सुभक्त नमः
487. सुभक्त नमः
488. सुभक्त नमः
489. सुभक्त नमः
490. सुभक्त नमः
491. सुभक्त नमः
492. सुभक्त नमः
493. सुभक्त नमः
494. सुभक्त नमः
495. सुभक्त नमः

519. કરિકારિવઁકામરુમાઢુતૈરવાય નમઃ
520. મમામિતમુળવાઢુપાઢુકાનિતૃપુણનાય નમઃ
521. નમઃમેધિલ્ નમઃ
522. નામપરાય નમઃ
523. નન્નિડામેધવિહ્વાય નમઃ
524. ઈકઢિલ્ નમઃ
525. કધાયિતે નમઃ
526. મુલ્લિતે નમઃ
527. ઈલ્લિતમૈગડાય નમઃ
528. ઈગમ્ભાઢિલ્લિમિલ્લિમિલ્લિતુવિનિગ્ધાનય નમઃ
529. મલ્લિકાઢ્વેત્તમનાય નમઃ
530. મલ્લિકાઢ્વેત્તમનાય નમઃ
531. કામારિમુઢ્વે નમઃ
532. કુઢુકિતે નમઃ
533. કમનીયગુલ્લકનાય નમઃ
534. મેમેલ્લુવાત્તીલ્લુપુમૈમૈવેવિનુમેવનાય નમઃ
535. માલિકાપિયગાલુકુરુપુલ્લિતવિગ્ધાનય નમઃ
536. મૃદુમ્ભવરિઠ્ઠાય નમઃ
537. મિલ્લે નમઃ
538. મિત્તકલ્લુમાય નમઃ
539. મ્મમાય નમઃ
540. મરુદ્વુળાલ્લમાયિતે નમઃ
541. ખૈલ્લુવમુલ્લમાય નમઃ

- 25

565. भौपभृष्टिककैमिकाय नभः
566. भौप्राष्टिकककैलाय नभः
567. भौपाभनिकपत्रगाय नभः
568. भौपगायनकुम्भिकाय नभः
569. भौवाडिष्टकपुष्पलिकै नभः
570. भौवागडिकमातुलाय नभः
571. भौपेन्द्रष्टिकवृष्टिकाय नभः
572. भौभ्राष्टिकपुम्बवत्काय नभः
573. भौवहृष्टनिकाभृष्टाय नभः
574. भौवीष्टिकवातुलाय नभः
575. भौवनाडिकपूमाय नभः
576. भौवामिष्टिकपञ्चाभृष्टाय नभः
577. भौवत्रुमिकवातुमाय नभः
578. भौविनामिकभट्टेष्टाय नभः
579. भौवपृष्टिकउत्तुष्टाय नभः
580. भौपृष्टिककातुगाय नभः
581. भौमाकुनिकभौकलाय नभः
582. भौवापीष्टिकवेमगाय नभः
583. भौष्ट्रिकल्लैगुष्टे नभः
584. भौविलिष्टिकहुष्टलये नभः
585. भौवभृष्टपष्टगाय नभः
586. भौष्ट्रिष्टिकरुष्टकाय नभः
587. भौवणीष्टिकगाउकाय नभः

588. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਗੋਪੁਸ਼ਟਾਥ ਨਮ:
589. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਕੈਕਿਲਾਥ ਨਮ:
590. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
591. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
592. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
593. ਮੈਂਬਰਿਸ਼ਿਕਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
594. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
595. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
596. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
597. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
598. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
599. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
600. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
601. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
602. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
603. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
604. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
605. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
606. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
607. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
608. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
609. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:
610. ਸ਼ਾਵਿਠੋ ਨਮ:

634. ਗੋਮਤੀਤੀਰੁਮੋਵਨਾਥ ਨਮਃ
635. ਖ਼ਰੁਪਰੁਧਰਾਏਟ ਪਦਮਪਾਦਨਿਦਿਸਕੁਤੇ ਨਮਃ
636. ਸੁਸ਼ਮਿਲ ਨਮਃ
637. ਤਤ੍ਵਮਘਾਟਿਮਯਾਵਾਕੁਤੁਰੁਪਵਤੇ ਨਮਃ
638. ਐਤਿਯੁੱਕਰਾਥ ਨਮਃ
639. ਐਤਿਯੁੱਤੀਪੀਨਿਦਿਸਕੁਤੇ ਨਮਃ
640. ਗਦਟਸੁਮੰਘਾਨਾਥ ਨਮਃ
641. ਸ਼ਲਕਨਜੁਵਗਾਰੁਨਾਥ ਨਮਃ
642. ਸੁਬਵਲ੍ਲਾਸ਼ਿਰੋਵੇਦਿਨੇ ਨਮਃ
643. ਸ੍ਰੀਪੁਲਾਗਿਰਿਮੋਵਕਾਥ ਨਮਃ
644. ਗੋਵਰ੍ਧਨਮਹੀਨਾਥਾਥ ਨਮਃ
645. ਗਿਰਿਥੋਗਪਏਸ੍ਥਾਥ ਨਮਃ
646. ਪੁਰੁਖੇਤੁਮਮਛ੍ਛੇਤ੍ਰਿਲ ਨਮਃ
647. ਵਿਮਲਾਪੀਠਕਲਾਕਾਥ ਨਮਃ
648. ਸਤਾਨਜੁਥ ਨਮਃ
649. ਸਤੈਸ਼ਮੇ ਨਮਃ
650. ਦਿਸ਼ੇਨ੍ਰਿਥਵਿਨਿਗ੍ਰਥਾਥ ਨਮਃ
651. ਸ੍ਰੀਤੁਨ੍ਰਿਲਿਤਦਿਸ਼ੇਸ੍ਰੀਦਸ੍ਰਮੁਖ਼ਗਿਰਿਸ੍ਥਿਲ ਨਮਃ
652. ਸਾਰਦਾਵਧਨਾਧ੍ਰਾਤਵ੍ਰਾਧ੍ਰਾਪੀਠਾਧਿਰੋਕਲ੍ਥਾਥ ਨਮਃ
653. ਰਾਮਾਨੁਪੁਰਥੇਤ੍ਰਿਲ ਨਮਃ
654. ਤੁਲ੍ਲਾਦਾਤਾਸ੍ਥਿਲ ਨਮਃ
655. ਵਰਾਹਦੇਵਤਾਮਾਰਸਾਰਦਾਕ੍ਰਿਥਸਕ੍ਰਿਤੁਤੇ ਨਮਃ
656. ਹੁਰਿਵਾਰਿਲ ਨਮਃ

657. कृष्णयन्त्रैर्मित्रै नमः
 658. श्रीरुद्रतीपत्य नमः
 659. विरुद्धकाण्डानुभलानिकरैर्मन्त्रै नमः
 660. विरुद्धभक्तैर्वभक्तनीयपद्मस्य नमः
 661. भनीधिमङ्गलीभानुभैलाभयभक्तगुरवै नमः
 662. प्रमृष्टीमृष्टाष्टैर्मृष्टाभयान्त्रिमैमिकाय नमः
 663. प्रमृष्टाभयभुविभुभुभुभलकभंभुताय नमः
 664. प्रमृष्टाभयभक्तैर्मन्त्रान्त्रिभक्तनानाय नमः
 665. मन्त्रमृष्टाभयनिधिपुष्पैर्गणनताम्बिकाय नमः
 666. उन्मीमृष्टाभयनान्नान्त्रिगिरिवन्त्रिनाय नमः
 667. कामकैलीपीपुत्राय नमः
 668. कभ्रवैगवतीमन्त्राय नमः
 669. एकभन्तामन्त्रमन्त्रैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 670. कामाक्षीमन्त्रमन्त्रैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 671. एवैर्मन्त्रै नमः
 672. परब्रह्मवृत्तभूषणैर्मन्त्रै नमः
 673. मन्त्रवृत्तभूषणैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 674. मन्त्रवृत्तभूषणैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 675. मन्त्रवृत्तभूषणैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 676. भीमभक्तमन्त्रपरीक्षाय नमः
 677. कामाक्षीमन्त्रपरीक्षाय नमः
 678. मन्त्रमन्त्रैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः
 679. मन्त्रमन्त्रैर्मन्त्रैर्मन्त्राय नमः

680. विष्टुवमीकुडमेधमविष्टुनमिडा य नमः
 681. एगङ्गुवे नमः
 682. एगमैनवे नमः
 683. माभूवेनवे नमः
 684. मभवयिने नमः
 685. मृष्टमृष्टमृष्टलिङ्गिने नमः
 686. मा ऋवेगविभक्तुते नमः
 687. वैयकरणीमेणिने नमः
 688. वभिष्टु य नमः
 689. ककुगभृग य नमः
 690. गेउभीयवमेभुम्लि नमः
 691. वैमेधिकमपराय नमः
 692. मेष्टेनिमदिङ्गमिने नमः
 693. ऐभिनीयकुष्टिुरुते नमः
 694. मिगभृगयवृष्टाय नमः
 695. वृभुपामुपउत्त्रियाय नमः
 696. मुष्टुङ्गवामिङ्गु नमः
 697. मित्रुगवगुगभाय नमः
 698. विनेनिमिउपेष्टुयगभीरुधृकुते नमः
 699. वृष्टुउष्टीवमिडा य नमः
 700. विष्टुमृष्टिविमारय नमः
 701. मिडिमीभाविगगल्लय नमः
 702. प्लवङ्गुपुक्कामकाय नमः

725. सु॒ङ्गवि॒टि न॒मः
 726. रु॒द्रवि॒डुभा॒य न॒मः
 727. रु॒द्रष्ट॑य न॒मः
 728. रु॒द्रकु॒डा य न॒मः
 729. ध्रा॒णि॒ष्ठ॒ना॒स्त्रि॒उ॒का॒स्त्रि॒गा य न॒मः
 730. क॒उ॒प॒ष्ट॑भू॒ली॒या॒श्र॒य न॒मः
 731. उ॒क्ता॒भा॒या॒रु॒उ॒ड्वि॒टि न॒मः
 732. कै॒वलृ॒बे॒ड्वि॒ण्यि॒ने न॒मः
 733. मु॒द्रभा॒न॒म॒डी॒रु॒का य न॒मः
 734. भु॒मे॒रु॒भ॒ल॒म॒स्त्रा॒रि॒त् न॒मः
 735. भा॒या॒म॒क्रि॒वि॒रा॒व॒ना य न॒मः
 736. म॒टु॒ल॒ना॒रि॒ण॒का॒नि॒ने न॒मः
 737. म्रा॒प॒रु॒न॒नु॒भ॒त्रि॒भ॒डे न॒मः
 738. मे॒रु॒मि॒वे॒रु॒वा॒कु॒मि॒त्रै न॒मः
 739. प॒टु॒गा॒भा॒य॒वे॒रु॒ना य न॒मः
 740. नि॒र॒ल्ल॒ने॒म्रा॒मे॒वि॒ने न॒मः
 741. मी॒क॒रा य न॒मः
 742. म॒भृ॒ण॒य॒रु॒डे न॒मः
 743. वि॒ष्ट॒पी॒भ॒रा॒वे॒गि॒ने न॒मः
 744. प॒र॒भा॒ङ्ग॒भ॒ण॒म्या॒य न॒मः
 745. त्रि॒पु॒णी॒डी॒रु॒वि॒रु॒उ॒चे न॒मः
 746. वे॒ग॒बे॒ड्वि॒वा॒का॒य न॒मः
 747. मी॒वि॒ष्ट॒म॒क्रि॒ण॒प॒ना य न॒मः

771. କୁଂଭାୟ ନମଃ
772. ଶ୍ଵରାୟ ନମଃ
773. ଓଞ୍ଜାୟ ନମଃ
774. ପରାକ୍ତୁ ଟୁଗନ୍ଧିୟାୟ ନମଃ
775. ମକଳାଞ୍ଜନେ ନମଃ
776. ଶ୍ଵକଳାୟ ନମଃ
777. ପୁରବେ ନମଃ
778. ପୁରୁଧାୟ ନମଃ
779. ପୁଞ୍ଜଳାୟ ନମଃ
780. ପୁଲ୍ଲାୟ ନମଃ
781. ମନ୍ତ୍ରାଭାୟାୟ ନମଃ
782. ପୁରାତନାୟ ନମଃ
783. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
784. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
785. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
786. ବନେଞ୍ଜାୟ ନମଃ
787. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
788. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
789. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
790. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
791. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
792. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ
793. ଶ୍ଵେତଶ୍ଵେତାୟ ନମଃ

794. ण॒क्खि॒सु॒ध॒ल्ल॒सु॒ता॒ङ्ग॒ने॒ न॒मः
795. ण॒क्ख॒पा॒ल्लि॒नि॒धे॒वि॒ता॒य॒ न॒मः
796. ण॒क्ख॒व॒त्ति॒मि॒रे॒सु॒धा॒मे॒धा॒यि॒ता॒प॒मू॒ख॒वे॒ न॒मः
797. ण॒भी॒क॒री॒कु॒ता॒भ॒उ॒रि॒प्प॒र॒द्ध॒ली॒ग॒ला॒य॒ न॒मः
798. ण॒तु॒रे॒प्प॒र॒ग॒भी॒र॒वा॒कु॒नि॒सु॒वा॒प्प॒कु॒ते॒ न॒मः
799. ण॒ल्ल॒ला॒य॒ न॒मः
800. ण॒त्तु॒प्प॒रा॒ङ्ग॒ने॒ न॒मः
801. णि॒उ॒ण॒भ॒क॒ना॒भि॒का॒य॒ न॒मः
802. णि॒त्ति॒ता॒मे॒ध॒सु॒ण॒म॒सु॒रि॒भ॒उ॒म॒सु॒वा॒य॒ न॒मः
803. णा॒लि॒ता॒सु॒वि॒ल्ल॒ना॒य॒ न॒मः
804. णा॒रा॒य॒ न॒मः
805. णि॒त्थि॒ल्ल॒ न॒मः
806. णि॒प्प॒भू॒रा॒य॒ न॒मः
807. णी॒ल॒भ॒ट्ठ॒उ॒भू॒न॒णि॒र॒उ॒न॒भा॒णा॒भि॒का॒य॒ न॒मः
808. णु॒लि॒उ॒प्प॒र॒उ॒रु॒ङ्ग॒तु॒वे॒ न॒मः
809. णु॒ल्ल॒पु॒ल्ल॒प्प॒रा॒भु॒कु॒ते॒ न॒मः
810. पु॒त्ति॒ष्ठा॒प॒क॒णे॒रे॒या॒य॒ न॒मः
811. पु॒त्ति॒प्पि॒उ॒म॒ला॒य॒म॒मे॒ न॒मः
812. पे॒प्प॒वि॒ल्ल॒न॒वा॒प्पि॒ग॒व॒म॒व॒प्प॒धे॒प्पि॒ता॒य॒ न॒मः
813. न॒त्ति॒ता॒मे॒ध॒सु॒ण॒रि॒ल्ल॒ न॒मः
814. य॒त्ति॒ण॒म॒वि॒म॒म॒कु॒ते॒ न॒मः
815. ण॒मि॒ता॒णु॒ङ्ग॒वा॒वा॒ङ्गु॒य॒ न॒मः
816. भु॒णी॒म॒सु॒नि॒धे॒वि॒ता॒य॒ न॒मः

817. न॒मीन॒म्भर॒भीङ्ग॒ भ्रा॒व॒पा॒वि॒उ॒वि॒ग्ग॒रा॒य न॒मः
818. प॒रि॒ःउ॒वा॒उ॒पा॒रि॒ःउ॒प॒मे॒ध॒प॒रि॒ःउ॒रा॒य न॒मः
819. उ॒द्ग॒म॒ङ्ग॒प॒क॒ए॒ना॒य न॒मः
820. इ॒भ॒म॒ङ्ग॒वि॒वे॒क॒कु॒ते न॒मः
821. नि॒ट्ट॒न॒नु॒य न॒मः
822. नि॒रा॒ल॒भा॒य न॒मः
823. नि॒र॒वा॒य न॒मः
824. नि॒पि॒ले॒व॒का॒य न॒मः
825. नि॒ट्ट॒णि॒ये न॒मः
826. नि॒ट्ट॒म॒ङ्ग॒ल॒य न॒मः
827. नि॒णि॒भा॒य न॒मः
828. नि॒र॒वि॒ट्ट॒का॒य न॒मः
829. नि॒ट्ट॒वा॒भि॒ने न॒मः
830. नि॒ट्ट॒मु॒ण॒ये न॒मः
831. नि॒ल॒वा॒य न॒मः
832. नि॒ग॒भा॒रि॒ञ्चे न॒मः
833. नि॒र॒ङ्ग॒ना॒य न॒मः
834. नि॒ट्ट॒प॒रु॒य न॒मः
835. नि॒ट्ट॒भृ॒ङ्गा॒य न॒मः
836. नि॒री॒मृ॒गा॒य न॒मः
837. नि॒धृ॒ते न॒मः
838. नि॒धृ॒उ॒ये न॒मः
839. निः॒धृ॒या॒य न॒मः

840. નિધુઐઐ ઠમઃ
841. નિપિલલઠમહુઐઐ ઠમઃ
842. પુરીમાઐઐ ઠમઃ
843. પુઠગઐઐ ઠમઃ
844. પુઠઐઐ ઠમઃ
845. પુઠઠમિઐઐ ઠમઃ
846. પુઠપિઐઐ ઠમઃ
847. વિપુઠઠઠઠઠ ઠમઃ
848. વિઠૈમાઐઐ ઠમઃ
849. મીવિઠૈધેઠમીગુઠઐઐ ઠમઃ
850. લઠૈઐઐ ઠમઃ
851. લઠૈઐઐ ઠમઃ
852. લઠૈઐઐ ઠમઃ
853. લઠૈઐઐ ઠમઃ
854. લઠૈઐઐ ઠમઃ
855. લીમઠૈઐ ઠમઃ
856. લંમગઠૈઐ ઠમઃ
857. લંમાઐઐ ઠમઃ
858. લંમઠૈઐઠૈઐઠૈઐ ઠમઃ
859. લંમમઠૈઐઠૈઐઠૈઐ ઠમઃ
860. લંમઠૈઐઐ ઠમઃ
861. ઠરિપિઐઐ ઠમઃ
862. ઠઠમઠૈઐઠૈઐ ઠમઃ

863. ਕਾਮਕੁਮਲਾਥ ਨਮ:
864. ਕਾਨਿਵਫ਼ਿਰੁਣਿ ਨਮ:
865. ਮਠਾਥ ਨਮ:
866. ਮਠਾਪਤਥੈ ਨਮ:
867. ਖ਼ਾਮਿਨੈ ਨਮ:
868. ਮਘੁਤਥੈ ਨਮ:
869. ਮਘੁਵਾਪਠਾਥ ਨਮ:
870. ਸ਼ੀਵੋਰਸੀਤਲਖ਼ਾਤੁਥ ਨਮ:
871. ਸ਼ੀਮਤੀਕਾਰਿਤਾਤੁਥਾਐ ਨਮ:
872. ਲਭਿਤਮੋਖਮਤੁਤੁਥ ਨਮ:
873. ਲਭਕੈਟੁਥਾਥਕਾਥ ਨਮ:
874. ਲਲਿਤਾਥ ਨਮ:
875. ਲਥਲੁਤੁ ਨਮ:
876. ਲਕੁਖ਼ਾਥ ਨਮ:
877. ਲਕੁਰੁਧੁਥ ਨਮ:
878. ਕਥੁਕਠੁਥ ਨਮ:
879. ਕਲਿਪ੍ਰੰਮਿਨੈ ਨਮ:
880. ਕਲੁਥੁਧੁਨੈ ਨਮ:
881. ਕਲਪੁਨਥੈ ਨਮ:
882. ਰੁਖਿਤਾਤੁਵਾਥਿਥਾਥ ਨਮ:
883. ਰੁਥਾਥ ਨਮ:
884. ਰੁਧੁਰਮੋਵਿਤਾਥ ਨਮ:
885. ਥਾਗਵਿਣਿ ਨਮ:

886. યૈગવિદિ નમઃ
887. યુક્તુય નમઃ
888. યમૈદ્દાય નમઃ
889. યમપિયાય નમઃ
890. ડહ્કરવૃરુતિવૃગ્ગાય નમઃ
891. નમિડારાતિમળ્લાય નમઃ
892. નાગમૈલમિરક્ષારિત્ત્વ નમઃ
893. રામગિદ્દામ્ભામ્ભાય નમઃ
894. રાદ્ધિડાપ્પુદ્દાય નમઃ
895. મદ્દાય નમઃ
896. મ્મદ્દિનાય નમઃ
897. મેદ્દમેદ્દાય નમઃ
898. યતિદ્દાવિવૈકલ્લય નમઃ
899. યતિયૈ નમઃ
900. યતિરુવનાય નમઃ
901. ડહ્કરિત્ત્વ નમઃ
902. વિડિડાદ્ધૈડમ્ભિડિડાયાય નમઃ
903. કૃપાનિયૈ નમઃ
904. યત્તૈ નમઃ
905. યત્તમનમે નમઃ
906. યમ્ભૈય નમઃ
907. યલ્લક્ષય નમઃ
908. યલ્લક્ષુપ્પલ્લય નમઃ

909. ਬਲਬ ਨਮ:
910. ਬਲਪਤਥੇ ਨਮ:
911. ਬਲ੍ਹਨੇ ਨਮ:
912. ਬਲ੍ਹੁਵੇ ਨਮ:
913. ਬਲ੍ਹਾਵਨਾਥ ਨਮ:
914. ਕੁਪਾਦਿਤਕਾਲਭਾਥ ਨਮ:
915. ਵਿਸ਼੍ਵਮੁਖਿਐ ਨਮ:
916. ਸ਼੍ਰਮ੍ਹਵੇ ਨਮ:
917. ਨਿਪਿਲਕੁਤਲਾਯਾਥ ਨਮ:
918. ਪਾਖਲ੍ਹਮਤਾਪਲ੍ਹਨਾਥ ਨਮ:
919. ਪ੍ਰਤਿਭਾਪਕਮੁਕੁਤਾਥ ਨਮ:
920. ਮਤਾਸ਼੍ਵਥਮਲਾਨਥਾਥ ਨਮ:
921. ਪਰਿਵਾਣਕਧ੍ਰਵੈਦ੍ਰਿ ਨਮ:
922. ਸ਼੍ਰਮ੍ਹਤੁਧ੍ਰੇ ਨਮ:
923. ਸ਼੍ਰਮ੍ਹਰਾਤੁਰਾਥ ਨਮ:
924. ਮੁਕੁਤਾਥ ਨਮ:
925. ਮੁਕੁਤ੍ਰਾਥ ਨਮ:
926. ਮਧ੍ਰਮ੍ਹਾਥ ਨਮ:
927. ਮਲ੍ਹਦ੍ਰਾਥ ਨਮ:
928. ਮਨੇਮਥਾਥ ਨਮ:
929. ਸਾਤ੍ਰਾਥ ਨਮ:
930. ਸੁਰੁਛ੍ਰਾਥ ਨਮ:
931. ਸੁਕੁਤਾਥ ਨਮ:

932. મુગ્ધાય નમઃ
933. મૈકલિવલ્લિટાય નમઃ
934. ઠિલ્લૈ નમઃ
935. ડરલ્લૈ નમઃ
936. લ્લમિટ્લૈ નમઃ
937. ઘલ્લુચૈ નમઃ
938. ખલ્લુચ્છનાય નમઃ
939. ગલ્લગલ્લિટાય નમઃ
940. ગલ્લુચ નમઃ
941. ગલ્લુકાય નમઃ
942. ગલ્લિમિટ્લૈ નમઃ
943. ગભાય નમઃ
944. ગભલ્લય નમઃ
945. ગભલ્લિચૈ નમઃ
946. ગલ્લુલ્લિચ્છિટાય નમઃ
947. ઘમ્ભુલાય નમઃ
948. ઘલ્લલ્લૈ નમઃ
949. રુદ્રાય નમઃ
950. મનલ્લૈ નમઃ
951. મેળાયૈ નમઃ
952. મળમનલ્લૈ નમઃ
953. મળપાલ્લય નમઃ
954. મળુલ્લય નમઃ

955. ग॒रुमी॒द्वय॑ न॒मः
956. ग॒रुपि॒याय॑ न॒मः
957. ना॒त्रुःपू॒ल्लय॑ न॒मः
958. न॒पू॒ल्लय॑ न॒मः
959. न॒ग॒न्निःपू॒ल्लय॑ न॒मः
960. ना॒पू॒ल्लय॑ न॒मः
961. पू॒ल्लन॒भना॑य न॒मः
962. वि॒ल्लना॒ङ्गने॑ न॒मः
963. वि॒ला॒मकु॑टे न॒मः
964. पि॒यापि॒यभू॒जली॑नाय न॒मः
965. म॒भु॒ताय॑ न॒मः
966. मु॒का॒म॒रु॒वते॑ न॒मः
967. म॒रु॒भये॑ न॒मः
968. म॒ए॒लाय॑ न॒मः
969. म॒न॒ग॒ये न॒मः
970. म॒वा॒यवे॑ न॒मः
971. म॒न॒भृ॒णाय॑ न॒मः
972. म॒ग॒ा॒ह्राय॑ न॒मः
973. म॒रु॒मु॒काय॑ न॒मः
974. म॒मे॒त्रे न॒मः
975. मे॒त्रे न॒मः
976. क॒त्रे न॒मः
977. म॒क॒रु॒काय॑ न॒मः

978. ઘગઝાચ નમઃ
979. ઘરમકાચ નમઃ
980. ઘરુપાચ નમઃ
981. ઘમ્મકાચ નમઃ
982. ઘમ્મકાચ નમઃ
983. મઘ્મકાચ નમઃ
984. મઘ્મકાચ નમઃ
985. ઘમ્મકાચ નમઃ
986. ઘમ્મકાચ નમઃ
987. મેઘ્મકાચ નમઃ
988. ઘમેઘ્મકાચ નમઃ
989. પ્મેઘ્મકાચ નમઃ
990. ાકાચ નમઃ
991. ઘનેકાચ નમઃ
992. કેવલાઘ્મકાચ નમઃ
993. મઘ્મકાચ નમઃ
994. મંભારમેઘકાચ નમઃ
995. નિટુમુઘ્મકાચ નમઃ
996. નિટુમુઘ્મકાચ નમઃ
997. નિટુમુઘ્મકાચ નમઃ
998. નિટુમુઘ્મકાચ નમઃ
999. નાટુવિટુમુઘ્મકાચ નમઃ
1000. રુઘ્મકાચ નમઃ



மீமம்-மஹ-கவக-மஹம்மா (மஹம்மா)

1. மீமம் — மீ குருவே நமஸ்காரம்
2. மஹம்மா — சுத்தமான ஹ்ருதயத்தை உடையவர்
3. மீமம் — உயர்ந்தவர்
4. மஹம்மா — (அவாக்கள்) அடங்கிய மனதை உடையவர்
5. மஹம்மா — கருணையின் கருவூலமானவர்
6. மஹம்மா — புற புலன்களை அடக்கியவர்
7. மீமம் — பொறுமை உடையவர்
8. மஹம்மா — சந்திரன் போல் பிரகாசிப்பவர்
9. மஹம்மா — (ஸம்ஸாரிகளின்) செயல்களை விடுத்தவர்
10. மஹம்மா — மனதையும் புலன்களையும் ஸத்விஷயங்களில் நிறுத்தியவர்
11. மஹம்மா — அழகுற எப்பொழுதும் காரியங்களில் முற்பட்டவர்
12. மஹம்மா — மனதை அடக்கியவர்
13. மஹம்மா — (ஸாஸ்த்ரம் மற்றும் குரு வாக்கியத்தில்) நம்பிக்கை உடையவர்
14. மஹம்மா — (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில் காலவரையறையற்றவராக முந்தையவர்களுக்கெல்லாம் குருவாக) தொன்றுதொட்டு இருப்பவர்
15. மஹம்மா — (மக்கள் நல்வழியில் வரமாட்டார்களா என்ற) அவா கொண்டவர்
16. மஹம்மா — ப்ரஹ்மாவால் போற்றப்பட்டவர்
17. மஹம்மா — விடாது நன்னடத்தையில் திறம்பட இருப்பவர்
18. மஹம்மா — திறமைசாலி
19. மஹம்மா — (வேதத்தின் உச்சியில்) வேதாந்தத்தில் (ஆசார்யனாக) நின்றவர்

20. மிவ: — ஸிவனாரின் (அவதாரமானவர்)
21. முஹூரக: — தூயதை நன்கு போதிப்பவர்
22. வமீ — (உணர்ச்சிகளை) தன் கட்டுக்குள் வைத்தவர்
23. விஷ்ணு: — (மூல வடிவில்) உலகத்தை ஆள்பவர்
24. ஹ்ரு: — சிறந்தவர்
25. ஹ்ரு: — மதிப்பிட முடியாதவர்
26. ஹ்ரு: — (அத்வைதத்தின்) மூல (பாஷ்ய நூல்களை) செய்தவர்
27. ஹ்ரு: — யஜ்ஞங்களை (தான் காப்பாற்றவேண்டியவையாகக்) கொண்டவர்
28. ஹ்ரு: — தலைவராக பட்டாபிஷேகம் செய்விக்கப்பட்டவர்
29. ஹ்ரு: — அனைத்தையும் செய்யவல்லவர்
30. ஹ்ரு: — பெரும் தேவன் (அல்லது பூதேவர்களுக்குள் சிறந்தவர்)
31. ஹ்ரு: — சுகமும் துக்கமும் (அனுபவிக்கும் ஸரீரமெனும் உபாதிக்கு உட்புகுந்தவர்)
32. ஹ்ரு: — உலக உற்பத்திக்கு காரணமானவர்
33. ஹ்ரு: — அழகையைப் போக்குபவர்
34. ஹ்ரு: — (பாபங்களை) நீக்குபவர்
35. ஹ்ரு: — கள்ளங்கபடமின்மை என்ற அழகை உடையவர்
36. ஹ்ரு: — (தோஷங்களை) அழிப்பவர்
37. ஹ்ரு: — (உலகு) ஆள்வதை சுபாவமாகக் கொண்டவர்
38. ஹ்ரு: — திறம்பட (உலகு) ஆள்வவர்
39. ஹ்ரு: — சக்தியுடையவர்களில் சிறந்தவர்
40. ஹ்ரு: — (பக்தர்களுக்கு) நலத்தை விளைவிப்பவர்
41. ஹ்ரு: — (ஆத்மா, மனஸ், இந்த்ரியங்கள்) ப்ரஸன்னமாக இருப்பவர்

42. பிஹ: — உறுதியாக இருப்பவர்
43. பிஹ: — அசைவற்ற (பரம்பொருளாக) இருப்பவர்
44. பிஹ: — தேவர்களால் போற்றப்படுபவர்
45. பிஹ: — என்றும் இருப்பவர்
46. பிஹ: — இனிமை மிகுந்த முகமுள்ளவர்
47. பிஹ: — ஸித்தர்களாலும் யோகிகளாலும் வணங்கப்பட்டவர்
48. பிஹ: — (கருணையாகிய) உமையுடன் இருப்பவர் (அல்லது) சந்த்ரனை (போல் உபதேச அமுதம் பொழிபவர்)
49. பிஹ: — அம்ருதமயமான சுத்தமான உடலைக் கொண்டவர்
50. பிஹ: — (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வம் உடையவர்
51. பிஹ: — (பக்தர்களின்) மிகுந்த அன்பிற்குரியவர்
52. பிஹ: — உலகுக்கு தலைவர்
53. பிஹ: — (உலகைக் காக்க) விடமுண்ட கண்டன் ஆனவர்
54. பிஹ: — (பக்தர்களிடம்) அன்புகாட்டுவதில் நிலைத்தவர்
55. பிஹ: — சிவனை வழிபடுபவர்
56. பிஹ: — சங்கர என்ற பெயர் கொண்டவர்
57. பிஹ: — (தர்மத்தைக் காப்பதில்) வீரர்
58. பிஹ: — ஸஞ்சாரத்தால் மங்களத்தைப் பரப்புவவர்
59. பிஹ: — சுத்த பிரம்மத்தில் ஐக்கியமே தனது (உண்மை) வடிவமாக உடையவர்
60. பிஹ: — முழு (பிரபஞ்ச வடிவினர்)
61. பிஹ: — அனைத்து மந்திரங்களாலும் போதிக்கப்படுபவர்
62. பிஹ: — (ஐம்) பூதங்களுக்கு உள்ளிருப்பவர்
63. பிஹ: — (ஐம்) பூதங்களை உருவாக்கியவர்

64. விநு: — எங்கும் நிறைந்தவர்
65. சூரநா — (சிவனார் வடிவில் தேவர்களை அந்தந்த வடிவில் பிறக்கும்படி) கட்டளையிட்டவர்
66. சம்பரீட்சி — தேவர்களின் (நலனுக்காக) முயற்சி செய்பவர்
67. கலிநிபுரநி: — கலிக்கு பயப்படும் தேவர்களால் (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில்) வேண்டப்பட்டவர்
68. ருநி — முருகனை (குமாரில பட்டராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்
69. ருநி — (அவ்வப்போது மலை) குறைகளை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
70. விநுநிபுரநி: — விஷ்ணு ப்ரஹ்மா (இவர்களை ஸநந்தனர் மற்றும் ஸுரேச்வரராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்
71. ருநி: — (அஸத்துகளிடம் சொல்லத்தகாத) ரகசியமானவர்
72. ருநி: — (ஹ்ருதய) குறையில் உறைபவர்
73. ருநி: — (ப்ரஹ்ம வடிவில் அறியவொண்ணாது எவ்விடமும்) ஒளிந்திருப்பவர்
74. ருநி: — அள்ளி வழங்குபவர்
75. ருநி: — செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
76. ருநி: — அறிஞர்
77. ருநி: — மலையில் ஸஞ்சரிப்பவர்
78. ருநி: — (உலகில் தர்மமெனும்) செல்வத்தை பராமரிப்பவர்
79. ருநி: — உலகைக் காப்பவர்
80. ருநி: — ஜீவராசிகளுக்கு தலைவர்
81. ருநி: — ஜீவராசிகளை உருவாக்கியவர்
82. ருநி: — மங்களமானவர்
83. ருநி: — மனதிற்கினியவர்

84. रुविधक् — பிறவிப்பிணிக்கு வைத்தியர்
85. रुतुपुण्टः — பக்தர்களால் பூஜை செய்யப்படுபவர்
86. पिनाकरुडा — (சிவனார் வடிவில்) பிநாகம் (என்னும் வில்லை) தாங்கியவர்
87. भङ्गलाङ्ग — (ஸத்துக்களின்) மண்டலத்திற்கு ஆத்மாவாக இருப்பவர்
88. भपुगवाक् — இனியன மொழிபவர்
89. भिउः — புன்னகை பூத்தவர்
90. भानुः — மரியாதைக்குரியவர்
91. भपुः — தேனையை (ஸாரமான ஆனந்தம் கொடுக்கும் பரம்பொருளானவர்)
92. भुमिः — மௌனமாக சிந்திப்பவர்
93. भङ्गउरः — பேரொளிபடைத்தவர்
94. भङ्गउवाक् — பெருமைக்குரியன சொல்பவர்
95. मलङ्कः — (பூமியை) அலங்கரிப்பவர்
96. मभलः — (முந்தைய பிறப்பில் சேகரித்து தீய எண்ணமாகிய) அழுக்கு இல்லாதவர்
97. मगभः — பாவமில்லாதவர்
98. मलः — (எளிமை மற்றும் கபடமின்மையில்) குழந்தை போன்றவர்
99. मगलैधम्मभुतुः — பெண்ணாசை அற்றவர்
100. मरु रुः — (வெளிப்படையாகவும் ஸூக்ஷ்மமாகவும்) சான்றோரிடையே இருப்பவர்
101. मरु भंम्यः — சான்றோருக்கு அடைக்கலமாக இருப்பவர்
102. मीली — சீலம் மிகுந்தவர்
103. मिवगुरुपूष्ठः — சிவகுருவின் ப்ரிய (மகனார்)
104. मरुभ्रमुपूर — ஆர்யாம்பாவின் உயர்ந்த குழந்தை
105. मिवः — மங்களமானவர்

106. पण्डितः — அப்பாலுக்கும் அப்பாலாய் இருப்பவர்
107. इयम्भिकेन्द्रियभुक्ताः — முப்பத்து முக்கோடி தேவர்களால் நன்கு வணங்கப்படுபவர்
108. उदारणीः — விசாலமான மனம் உடையவர்
109. मनुष्यः — ஸத்ய வடிவினர்
110. कालीन्तरः — காலடியில் பிறந்தவர்
111. मन्त्र्यः — இரண்டற்றவர்
112. विष्णुपतिः — கல்விக்கு தலைவர்
113. वरः — ப்ரஹ்மசாரியாக இருப்பவர்
114. वैद्यः — (த்யானத்தால்) அறிய வேண்டியவர்
115. मित्र्यः — சைதன்ய வடிவினர்
116. मुक्तिकाप्यः — சூர்ணிகா (பூர்ணா என்னும் நதியில் பால்யத்தில்) களித்தவர்
117. श्रीभद्रिउगद्भुः — மதிப்பிற்குரிய அன்னையால் இல்லறம் (ஏற்கும்படி) வேண்டப்பட்டவர்
118. म्वेणीः — (இல்லறத்தை விட) உயர்ந்ததை மனதில் அசையாது கொண்டவர்
119. मित्रमिकः — ஆசார்யனை சரணடைந்தவர்
120. श्रीभूयः — (குரு முதன்முறை பார்த்தபோதே ஞானப்) பொலிவுடைய முகமுள்ளவராக (திகழ்ந்தவர்)
121. श्रीणः — (அப்பொழுதே ஞான) லக்ஷ்மியைத் தாங்குபவராக (விளங்கியவர்)
122. मुद्गी — (உலகோருக்கு வழிகாட்டுவதற்கான) தேஜஸ்ஸைக் கொண்டவராக (குருவால் காணப்பட்டவர்)
123. माभिउ — (சாஸ்த்ரத்தின்) உத்தரவை போதிப்பவர்
124. मुनिः — தூயவர்
125. उल्लः — (தேஜஸ்ஸால்) மிகவும் ஜ்வலிப்பவர்

126. மஹா: — (பிறரின் நன்மையை) ஸாதித்துக்கொடுப்பவர்
127. மூஷாநா — வலுவானவர்
128. மங்கிவம்: — துறவறம் பெற விரும்பியவர்
129. மரிஷ்ஷுதவிரு: — (பூர்ணா) நதியில் உடல் முழுவதும் நனைத்தவர்
130. மூருருவூலகபுமபூமபூதி: — முதலை பிடித்ததை வ்யாஜமாகக் கொண்டு தாயிடம் துறவறத்திற்கு அனுமதி பெற்றவர்
131. மபூ: — (உடனே ஆபத்) ஸந்ந்யாஸம் பெற்றவர்
132. மங்கி — புலன்களை அடக்கியவர்
133. பூதி — ஸந்ந்யாஸ மந்த்ரத்தை உச்சரித்தவர்
134. மஹாநாநா: — ஸம்ஸார (வாழ்க்கையை) தியாகம் செய்வதில் முனைந்தவர்
135. மசிஷ்ஷா — (துறவறத்தால் புதிய) பொலிவு பெற்றவர்
136. மூருவிரு: — கோவிந்த (பகவத்பாதரை மனதினால் குருவாக) வரித்தவர்
137. பூதி: — (குருவிருக்கும் இடம் நோக்கி) கிளம்பியவர்
138. பூபூமபூ: — ஸத்குருவை சென்றடைந்தவர்
139. மூதி — (குருவினால் சிஷ்யனாக) ஆமோதிக்கப்பட்டவர் / ஞான நறுமணம் கொண்டவர்
140. நிரமபூ: — வேதாந்தத்தை அறிந்தவர்
141. மூருபூமபூ: — ஒரே ஆனந்த ரஸமாக எப்போதும் இருப்பவர்
142. மூருபூமபூ: — ஸ்ரீ பிரம்ம சூத்திரத்திற்கு வியாக்யானம் எழுதியவர்
143. மூருபூ: — ஒரே தண்டத்தை கொண்டவர்
144. மூருபூ: — காவியை உடுத்தியவர்
145. மூருபூமபூ: — பக்தர்களாகிய உலகத்தோர் (தமக்கு) மாணவர்களாகக் கொண்டவர்

146. ரேவிரூரூவரூய: — கோவிந்த பகவத்பாதருக்கு பிரியமானவர்
147. ருரிமரூரூரி — (அவரது பூர்வாச்ரம புத்ரராகிய பர்த்ரு)ஹரியின் சக மாணவர்
148. மூரூரூரூய: — கௌட(பாதரின்) பாதங்களைத் தொட்டு (வணங்கியவர்)
149. மாதங்க மஹாராணியின் வேண்டுகோளின்படி (அந்த ராஜ்ஜியத்தில்) நல்தர்மத்தை ஸ்தாபித்தவர்
150. யதிகளுக்கு தீர்த்த முதல் புரீ வரை (தசநாமி) ஸம்ப்ரதாயத்தை ஏற்படுத்தியவர்
151. வித்யவர் வேடத்தில் வந்த) வியாசருடன் வாதம் புரிந்தவர்
152. பல சிஷ்யர்களால் புடைசூழ்ந்தவர்
153. பத்மபாதரை (சிஷ்யனாக ஏற்று) பாதுகாத்தவர்
154. யோகத்தினால் ஹரனின் மலைக்கு (கைலாயத்திற்கு) சென்றவர்
155. (சிவனார் அளித்த) ஐந்து லிங்கங்களை எடுத்து வந்தவர்
156. (ஸௌந்தர்ய லஹரியின் முன் பகுதியாகிய) ஆநந்தலஹரியை பெற்றவர்
157. கேதாரில் முக்தி லிங்கத்தை ப்ரதிஷ்டை செய்தவர்
158. நேபாளத்தில் வர லிங்கத்தை வைத்தவர்
159. காச்மீரம் முதலான இடங்களில் வசித்தவர்
160. கெட்ட வாதங்களுடைய மதங்களை கண்டித்தவர்
161. ஹஸ்திகிரி (விஷ்ணு காஞ்சி) முதலான கேஷத்திரங்களுக்கு சென்றவர்
162. மூரூ: — நல்லறிவு உள்ளவர்

163. க்ருக்ஷேத்ரிசூத்ரு: — (குமாரில) பட்டர் கூறிய (ஈசன் தேவையில்லை, கருமமே பலனளிக்கும் என்ற) ஸித்தாந்தத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
164. ஸிதம்பரநரதி: — மண்டன மிசர் (மற்றும் அவரது பத்னியான) பாரதியை வெற்றி கொண்டவர்
165. பரகாயப்ரவேசமயுபாஸ்தமநரந: — பரகாயப்ரவேசம் செய்து காம சாஸ்த்ர நுணுக்கங்களை அறிந்தவர்
166. குருநிர்மபுலகநரகநர: — (பரகாயப்ரவேசத்தின் போது) குறைவில் (ஒளிக்கப்பட்டிருந்த தமது இயல்பு உடலை சிலர் எரிக்க முயன்ற போது) நரசிம்மரை வேண்டி எரிந்த தன் கரத்தாமரைகளை மீட்டுப்பெற்றவர்
167. மரபுதிஸ்யபுதபதிஸ்யபுதிஸ்ய: — கலைவாணியை வெற்றிகொண்டு ஸுரேஸ்வரரை துறவி ஆக்கியவர்
168. க்ருபுமலகமேதூதி: — ஹஸ்தமலகரால் ஸேவிக்கப்பட்ட திருவடிகளைக் கொண்டவர்
169. தோகாசார்யரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
170. சித்ஸுகர் உதங்கர் (போன்ற) நல்மாணவர்களால் வணக்கப்பட்ட திருவடியினர்
171. குணக்கடலானவர்
172. விருப்பப்படி (தனது மூல) சிவ வடிவம் எடுக்கக்கூடியவர்
173. கௌரியை ஈர்த்தவர்
174. உத்தமமான குரு
175. குருமார்களுக்கரசர்
176. நல்ல குணம் உடையவர்
177. (பக்தர்களைக்) காப்பவர்
178. (ரகசியங்களை) ஒளிப்பவர்
179. மனித வடிவம் கொண்ட (தெய்வம்)

180. निम्भः — மமதையற்றவர்
181. नरकासुरिः — நரகத்திற்கு எதிரி
182. नभृः — வணங்கத்தக்கவர்
183. नपः — தலைவர்
184. निरङ्गः — அப்பழுக்கற்றவர்
185. निम्बूः — ஆசைகளை கட்டுப்படுத்தியவர்
186. निष्कलः — பகுக்க முடியாத (பிரமமே சொருபமானவர்)
187. निरुः — என்றும் இருப்பவர்
188. नभरूपविवेकवान् — பெயர் உருவம் (இரண்டும் ப்ரஹ்மத்தைக் காட்டிலும் வேறு என்ற) விவேகம் உள்ளவர்.
189. नलीकः — பொய்யற்றவர்
190. निक्षिप्यः — செயல்களுக்கப்பாற்பட்டவர்
191. नीरुक् — வலியற்றவர்
192. निरामीः — ஆசைகள் இல்லாதவர்
193. निरभयः — வியாதி இல்லாதவர்
194. निरुतिः — (யாருக்கும் தலை) வணங்கத் (தேவை) இல்லாதவர்
195. निःशृणकरः — ஸ்வதா (என்று சொல்லி செய்யும் பித்ரு காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
196. निःशृणकुश — ஸ்வாஹா (என்று சொல்லி செய்யும் தேவ காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
197. निरीश्वरः — (தனக்கு மேற்பட்ட) ஈசனில்லாதவர்
198. नीरूपकः — உருவற்ற (பரம்பொருளானவர்)
199. निशुः — குணமற்ற (பரம்பொருளானவர்)
200. निष्क — புண்ணிய பாபமற்ற (பரம்பொருளானவர்)

201. निवृषः — துக்கமற்றவர்
202. वमी — வசீகரிப்பவர்
203. निज्ञेयः — பற்றில்லாதவர்
204. निवृषः — என்றும் வலுவானவர்
205. रुषः — உற்சாகமுள்ளவர்
206. उष्ट्रमयः — திருப்தியான ஜனங்களால் ஆஸ்ரயிக்கப்படுபவர்
207. भारङ्गरी — (ப்ரம்ம ஞான நிலையை) நேரடியாக அனுபவித்தவர்
208. भविष्यः — (ப்ரம்ம ஞான நிலைக்கு) அருகில் சேர்ப்பிப்பவர்
209. मृगिः — தத்துவமறிந்தவர்
210. भावङ्गुरुः — (அன்றன்று) மாலை (எங்குள்ளாரோ அங்கேயே இரவு தங்கும்) வீடாக கொண்டவர்
211. वमी — புலன்களை கட்டுப்படுத்தியவர்
212. भग्न — உண்மை வடிவினர்
213. भाङ्गरी — உண்மை(பொருளான பகவானை) உபாஸிப்பவர்
214. भाङ्गिकः — சத்வ குணம் நிரம்பியவர்
215. भट्टः — கலாசாரம் நிரம்பியவர்
216. भवभिः — அனைவருக்கும் நண்பர்
217. भूराङ्कः — காமனை அழித்தவர்
218. भविष्यः — சிஷ்யர்களுடன் கூடியவர்
219. भङ्गनी — (வேத தாற்பரியத்தை) ஸங்க்ரஹம் செய்தவர்
220. भृङ्गरी — மூத்தவர்
221. मली — சக்திமிக்கவர்
222. वाग्मी — வாக்கு வன்மை மிக்கவர்

223. भिडैत्रिड्डा — அளவோடு பேசுபவர்
224. वाग्धमः — பேச்சை அடக்கியவர்
225. वरिष्ठः — மிக உயர்ந்தவர்
226. वृष्टापाष्टाधिकपदः — உரைகளை சரித்திரங்கள் (போல் அழகுற உருவாக்குவதில்) திறமிக்கவர்
227. परमः — எல்லாவற்றிலும் உயர்ந்தவர்
228. परितुः — சுற்றிலும் இருக்கும் (பரம்பொருளானவர்)
229. पूरुः — பக்குவமானவர்
230. पूरुः — அறிவாளி
231. पीतुः — மகிழ்வுடன் இருப்பவர்
232. पिव्वरुः — பிரியமாக பேசுபவர்
233. पूउदी — (தோஷங்களை) அறவே ஒழிப்பவர்
234. रूवेगी — தஹர யோகம் அறிந்தவர்
235. पूरुः — வணங்கிய இயல்பினர்
236. पूनिरुपूः — கேள்விகளுக்கு (பதில்களை) நிரூபித்தவர்
237. परङ्गुः — எல்லையை அடைந்தவர்
238. परमभुतुः — பாசத்திலிருந்து விடுபட்டவர்
239. परविडा — பரத்தை அறிந்தவர்
240. पूउगीरिडा — உள்நோக்கிய பார்வையுடையவர்
241. मरिष्ठरविडा — (ப்ரபஞ்சமாம் தோற்றத்திற்கு) ஆதாரத்தை அறிந்தவர்
242. मृष्टः — (அருள்மழைபொழிய) காரணமில்லாதவர்
243. रकवादी — ஒரே இறை எனும் வாதத்தை கொண்டவர்
244. मृष्टमरुः — இரட்டையை ஒப்பாதவர்

245. ஸ்ரீ: — தன்னில் நிலைத்தவர்
246. ஸ்ரீ: — (மோக்ஷ நிலையில் தன்னை ஆள பிறர் இல்லாது) தன்னைத் தானே ஆள்பவர்
247. ஸ்ரீ: — வியாபித்து ஆள்பவர்
248. ஸ்ரீ: — மௌனமாய் இருப்பவர்
249. ஸ்ரீ: — தானே ஒளிர்பவர்
250. ஸ்ரீ: — (மற்றொருவரை எதிர்பாராமல்) தாமே திறமிக்கவர்
251. ஸ்ரீ: — மேன்மை பொருந்தியவர்
252. ஸ்ரீ: — உருவமில்லாதவர்
253. ஸ்ரீ: — (எளிதில்) விளங்காதவர்
254. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த ஜோதியானவர்
255. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த பதவியானவர்
256. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த உறைவிடமானவர்
257. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த எல்லையானவர்
258. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த சக்தியானவர்
259. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த கதியானவர்
260. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த சேருமிடமானவர்
261. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த பொருளானவர்
262. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த பிரம்மமானவர்
263. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்து முன்னின்றவர்
264. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்ததை அடைவிப்பவர்
265. ஸ்ரீ: — மிகவும் உயர்ந்த த்யானவிஷயமானவர்
266. ஸ்ரீ: — மிகுந்த சாந்தமே சொருபமானவர்

267. ப்மஃ௩௧: — திருப்தி ஸெய்பவர்
268. ப்ஃ௩௩௩௩௩௩: — ஞானம் தவிர வேறற்ற மூர்த்தியானவர்
269. ப்மஃ௩ — வழிநடத்திஃ ஸெல்பவர்
270. ப்ஃ௩௩௩௩௩௩ — ஁ள்ளிருக்கும் ப௦ாருளை அறிந்தவர்
271. விஃ௩௩ — நுண்ணிய அறிவுடையவர்
272. விஃ௩௩௩ — ஁லகை ஁ருவாக்கியவர்
273. வீ௩: — ஁லகின் (஁வ்வொரு அம்சங்களையும்) அமைத்தவர்
274. வீ௩வீ௩௩வீ௩வ: — வேதத்தினால் மட்டும் அறியத்தக்கதும் தன்னிடம் மட்டும் ஁ள்ளதுமான (தனிப்) ப௦ருமையை ஁டையவர்
275. மஃ௩௩: — சத்தியத்தை விரதமாக கொண்டவர்
276. மஃ௩௩: — சத்தியத்துக்கு அர்ப்பணமானவர்
277. ஃ௩௩: — மூன்று காலத்துக்கும் சத்தியமானவர்
278. மஃ௩௩௩௩: — சத்தியத்திற்கு நாயகன்
279. மஃ௩௩௩: — சத்தியத்தின் அடிப்படையில் (ஸெயல்படுபவர்)
280. மஃ௩௩: — சத்தியமான வாழ்த்துகள் வழங்குபவர்
281. மஃ௩௩௩௩: — சத்திய ப்ரயோஜனமுடைய காரியங்களை ஁னக்குவிப்பவர்
282. ம௩: — (அனைத்தையும்) ஸமமாக பார்ப்பவர்
283. வீ௩௩ — (அனைத்தையும்) கவனித்துக்கொண்டிருப்பவர்
284. மஃ௩௩௩௩௩௩: — சத்சித் ஆனந்த வடிவானவர்
285. ம௩௩௩௩: — ஸத் அஸத் (஁ரண்டையும் பிரிப்பதில்) முனைந்தவர்
286. மஃ௩௩: — சத்தியமே வடிவானவர்
287. மஃ௩௩௩: — சத்தியத்தில் நன்கு நிலைத்தவர்
288. ன௩௩: — (சிவனார் வடிவில்) மலைக்கு ஈசன்

289. கஃபநிஃ — மாணவர்களால் கொண்டாடப்படுபவர்
 290. ஈரஃபிஃ — நாரதர் முதலியவரால் மிகவும் போற்றப்பட்டவர்
 291. ஈஃ — (பகவானை) வணங்கும் சுபாவமுடையவர்
 292. ஈரீரஈஃ — பெண்களோ ஆண்களோ (கண்டிராத) அபூர்வ வடிவினர்
 293. ஈஃபிஈஃ — வியாசர் ஜைமினி ஆகியோருடன் வாதம் புரிந்தவர்
 294. ஈரஃபிஃ — சாரதையை வென்றவர்
 295. ஈஃ — அடக்கம் கொண்டவர்
 296. ஈஃஈஃஈஃஈஃ — ஸுரேஸ்வராசார்யருக்கு தனக்கு (நிகரான ஸந்ந்யாஸ) ஆஸ்ரமத்தை கொடுத்தவர்
 297. ஈஃபிஃ — சிந்தனையாளர்களில் சிம்மம்
 298. ஈஃஈஃஈஃஈஃஈஃ — (சூட்டினால்) முத்திரைகள் தரித்துக்கொள்வது போன்ற சாஸ்த்ரம் தடுத்த செயல்கள் அறவே அற்ற வைதிகமாக பாதையை அமைத்தவர்
 299. ஈஃஈஃஈஃஈஃஈஃ — உமித்தீக்கூட்டத்தின் இடையே இருந்த குமாரில (பட்டரால்) வணங்கப்பட்டவர்
 300. ஈஃஈஃஈஃஈஃஈஃ — கடினமான மலைகள் போன்ற துஷ்ட வாதங்களை (அழிக்கும்) வஜ்ராயுதமானவர்
 301. ஈஃபிஃ — கவி இயற்றுவதில் சிம்மம்
 302. ஈஃஈஃஈஃஈஃஈஃ — மதம் பிடித்த யானைகள் போன்ற துர்வாதிகளை (வீழ்த்தும்) சிங்கம் போன்றவர்
 303. ஈஃஈஃ — கலியை நாசம் செய்பவர்
 304. ஈஃஈஃஈஃ — யோகத்தால் நோயை நீக்கியவர்
 305. ஈஃஈஃஈஃ — ஞான (பாதையை) திரிபற அறிந்தவர்
 306. ஈஃஈஃ — அளவற்ற பொலிவுடையவர்

307. **ஈதஈநபுதிஹுமூநேசுரநம:** — ஜைனர்களின் இடைஞ்சல்கள் மற்றும் ஸ்தம்பன உச்சாடனங்களுக்கான மந்த்ரங்களை முறியடித்தவர்
308. **வீமேபிகவிமேபேதிவிமேபவிமேப:** — வைசேஷிகர்களின் முக்கியமான கூற்றுகள் வறண்டுபோகும்படி செய்வதில் நிபுணர்
309. **நிரமூநீதிமூநீமீவரூகவதூகம:** — தலையாய த்வைதிகளாகிய சைவர்கள் மற்றும் பாகவத மதத்தவர்களின் ஸாஸ்த்ரத்தை நிராகரித்தவர்
310. **காஜீநகரநிமூதூரமேநபுபாதி:** — காஞ்சீபுர நகரத்தை (ஆசார்யாளின் ஆஜ்ஞைப்படி மீண்டும்) நிர்மாணம் செய்துகொடுத்த ராஜஸேனன் என்ற அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
311. **வரமலயநிமூதூ** — (ராஜஸேனன் மூலம்) வரதர் ஆலயத்தை (புனர்)நிர்மாணித்தவர்
312. **ரகமூநபபேதூ:** — ஏகாம்ரநாதரின் இருப்பிடத்தை (ஜீர்ண) உத்தாரணம் செய்(வித்)தவர்
313. **குருமூநிகுலாநாபூபபூ:** — (காமாக்ஷி மூலஸ்தானமாகிய பிலாகாச) குறையில் இருந்த ஜீவகலையின் உக்ரத்தை நீக்கியவர்
314. **காலபூ:** — (சிவனார் வடிவில்) காலனையே கண்டித்தவர்
315. **காமகேதூரநீ:** — காமகோஷ்டம் (என்ற புண்ய) பூமியை தன் விளையாட்டு இடமாக கொண்டவர்
316. **காமகேரபமூ:** — (காமாக்ஷியாம்) காமகோடியின் பாதங்களை ஆஸ்ரயித்தவர்
317. **காமாநீவரிவமூதூ** — காமாக்ஷிக்கு (பலவித) சேவைகளை செய்தவர்
318. **காலமூநீவரந:** — காலஹஸ்தீஸ்வரரை பூஜித்தவர்
319. **ஹூமேபநமூபுபமேபாநலமிர:ப:** — ஸேஷாசலத்தின் உச்சியை எளிதில் அடைய அனுகூலமான படிக்கட்டை அமைக்கச்செய்தவர்
320. **பிவூ:** — தெய்வீகமானவர்
321. **பிவூநூவநமே நம:** — தெய்வீக பிரம்ம வர்சஸ் உடையவர்

322. பீனரநீ — தீனர்களை காப்பவர்
323. ஸாபரு: — அல்பத்தனத்தை நீக்குபவர்
324. ஸேவ: — தேவர்களுக்கும் தேவர்
325. பீனரநீ: — தீனர்களுக்கு உறவினர்
326. ஸாபரு: — அன்பிற்குரியவர்
327. பீனரநீ: — தீனர்களின் தீனத்தன்மையைப் போக்குபவர்
328. ஸேவ: — தோஷங்களிலிருந்து தூரத்திலிருப்பவர்
329. ஸேவ: — துஷ்டர்களுக்கு எதிரி
330. ஸேவ: — துர்வாசரால் சிலாதிக்கப்பட்டவர்
331. ஸேவ: — அல்பத்தனம் இல்லாதவர்
332. ஸேவ: — பொருள் முதலியவற்றில் ஆசையை விட்டவர்
333. ஸேவ: — குற்றங்களை (விலக்குவதற்காக அவற்றை) அறிந்தவர்
334. ஸேவ: — தொலைவில் உள்ளவற்றை காண்பவர்
335. பீனரநீ: — (வருங்காலத்தை) வெகுமுன்பே பார்க்கவல்லவர்
336. ஸேவ: — மோசமான நிலையை அகற்றுபவர்
337. ஸேவ: — ஏழ்மையை கட்டுப்படுத்துபவர்
338. ஸேவ: — தயை உடையவர்
339. ஸேவ: — புத்தியில் உள்ள குறைகளை மிச்சமில்லாமல் சிதைப்பவர்
340. ஸேவ: — அத்வைதத்தின் வைபவத்தை விஸ்தாரம் செய்தவர்
341. ஸேவ: — க்ஷேத்ராடன முறைப்படி முழு பாரத மண்டலத்தையும் சுற்றியவர்
342. கைலாசமேவ: — கைலாசத்தை சேவித்தவர்

343. गन्तीनरायणपदम्यः — பத்ரிநாராயணரின் பாதங்களை ஆசிரயித்தவர்
344. कामरूपिनः — காமரூபம் (அஸ்ஸாமில் உள்ள தேவியை) அர்ச்சித்தவர்
345. कामः — காமம் இல்லாதவர்
346. कामीरिवरमेवकः — காசமீரத்தில் ஈசனுக்கு சேவை செய்தவர்
347. अवन्ती त्वारका अयोध्या माया कांक्षी आकिय क्षेत्राङ्कः — அவந்தீ த்வாரகா அயோத்யா மாயா காஞ்சீ ஆகிய க்ஷேத்ரங்களை விரும்பியவர்
348. कालीभद्ररिवरभृद्वीप्यागः — காளிகட்டம், ஹரித்வார், ஜம்பு (ஜம்மு) தேவி, பிரயாகை ஆகியவற்றுக்குச் சென்றவர்
349. श्रीमैत्रेयरात्राघपुत्रेभृमृभगः — ஸ்ரீசைல ஈசன், ஜகந்நாதம், புருஷோத்தமம், பீம் (சங்கர க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்
350. भृङ्केष्टिनीविभृवाभिनीमेवरापरः — தர்யம்பகம், உஜ்ஜயினி, விந்த்யவாசினி (க்ஷேத்ர தெய்வங்களை) ஆர்வத்துடன் வணங்கியவர்
351. मेरुकृकुभारीगः — சேது, கன்யாகுமரி (க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்
352. एनारुनरात्रिरु — ஜனார்த்தன (க்ஷேத்ரத்தில் இருந்த) ஜனங்களின் கஷ்டத்தைத் தொலைத்தவர்
353. मनपुत्रवैष्णव् धामलपदम्यः — திருவநந்தபுரம், வ்யாக்ர (க்ஷேத்ரம்) மற்றும் திருச்சூரை நாடியவர்
354. कालीकलः — காலடியில் (பிறந்த ஞான புஷ்டியுடன் கூடிய) யானைக்குட்டி
355. कलः — (காரியங்கள் செய்வதில்) திறமிகுந்தவர்/முனைந்தவர்
356. भरःमरात्रीगरः — குளங்கள், (அவற்றின் கரைகளில் அடர்ந்திருக்கும்) புல்லுகள், நீர்வீழ்ச்சிகள் (இடையே) ஸஞ்சரித்தவர்
357. कृष्णकलारपाशुपुत्रैरमैलभनीगरः — கர்ணாடகம், ஆந்த்ரம், பாண்டியம், சேரம் மற்றும் சோழ நாடுகள் அனைத்திலும் ஸஞ்சரித்தவர்
358. श्रीनीपतिवृत्रैणकाश्वैउवनाम्यः — வில்வவனம் (வைகாவூர்), நீபவனம் (ஆலவாய்), தில்லைவனம் (சிதம்பரம்), ஆலங்குடி, சாயாவனம் (சாயக்காடு), வெண்காடு (ஆகியவற்றை) நாடியவர்

359. **भार्गविरक्षभप्राज्ञमविप्राम्यः** — மதிக்கப்பெறும் ஸ்ரீரங்கம், மதுரை, மருதூர், வில்லிபுத்தூரை நாடியவர்
360. **श्रीपलाश्वरीरक्षप्राज्ञमुच्यते** — அகிலாண்டேஸ்வரிக்கு ரத்ன தாடங்கமாக யந்திர ராஜமாகிய (ஸ்ரீசக்ரத்தை) அணிவித்தவர்
361. **काष्ठीगुणमूदमुद्रापरिभूः** — காஞ்சீ (கேஷத்ர பிலாகாசமாகிய) குறையை மூடும்படி (ஸ்ரீ)சக்ர ராஜத்தை மூடியாக வைத்தவர்
362. **सुभृष्टैर्निलाकमलिङ्गमेवपुत्रः** — பூமி, ஜலம், தேஜஸ், காற்று, ஆகாசம் (ஆகிய பஞ்ச பூத கேஷத்ரங்களான காஞ்சீ, திருவானைக்கா, திருவண்ணாமலை, காளஹஸ்தி, சிதம்பரம் இங்குள்ள) லிங்கங்களை ஸேவிப்பதில் ஆதரவு கொண்டவர்
363. **मृद्वुलभूषी** — ஸத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) கேஷத்ரத்தில் வஸித்தவர்
364. **कामकैरिभामुद्रः** — காமகோடி மடத்தை நிலைப்பிடமாக கொண்டவர்
365. **पिण्डभूभरुमुभैरलिङ्गः** — சிதம்பர ஸபையில் மோக்ஷ லிங்கத்தை வைத்தவர்
366. **मलिङ्गकः** — (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாக) தனிப்பட்ட அடையாளம் இல்லாதவர்
367. **ऋमङ्गम्भृमुैरलिङ्गः** — ருஷ்யசிருங்கர் ஆசிரமத்தில் போக லிங்கத்தை வைத்தவர்
368. **ऋभूरी** — (உலகெங்கும் பரவியிருக்கும் ஸத்யத்தை அறிவதற்கான) ருதம்பரா (ப்ரஜைஞ எனப்படும் ஞானத்தை) கொண்டவர்
369. **मारणभार्गवैः** — சாரதையால் மதிக்கப்பட்ட (நீ பூமியில் ஆங்காங்கு இருந்து மக்களுக்கு அருள வேண்டும் என்ற) வேண்டுகோளை விடுத்தவர்
370. **मवः** — எல்லாம் அறிந்தவர்
371. **मवपपुत्र** — எல்லா பாபங்களையும் நீக்குபவர்
372. **मारणभामङ्गमुमारपीपावः** — சாரதையின் நிற்பிடத்தில் சாரதா பீடத்தை நிறுவி பவித்ரமாக்கியவர்

373. **मरुत्तुपुनपुत्तुमृगिगिरिभूतः** — சாரதையை ஸ்தாபித்ததால்
ருச்யச்ருங்ககிரியை சிறப்படையச்செய்தவர்
374. **ममरीरवणैवृत्तकामकैरिभम्भिः** — அசரீரியின் சொல்படி காஞ்சி மடத்தை
நிறுவி வளர்த்தவர்
375. **कामकैरिभरुपीभपृत्तमृभरुभम्भिः** — காமகோடி மஹா பீடத்தில்
காணப்பட்ட பெரிய மணியைப் போன்றவர்
376. **कलशः** — (சிவனார் வடிவத்தில்) யமனை அடக்கியவர்
377. **कभपुक्** — விரும்பிய (பலன்களை) அளிப்பவர்
378. **कशुः** — அன்பிற்குரியவர்
379. **मरुत्तुलैवृत्तपुः** — சாரதையையே ஜயிக்கும் வாக்கை வாயில் கொண்டவர்
380. **कामकैरिपरगैश्री** — காமகோடி பூமியை தனது கொட்டில் போல்
(இருப்பிடமாக) கொண்டவர்
381. **कश्विक्तुलमोपरः** — யதிகளின் குழாமுக்கு தலையாயவர்
382. **मिधुमरुपररुवृत्तैरुत्तुपुः** — சிஷ்யர்கள் கூட்டத்திற்கு பர (வஸ்துவின்)
ஞானமாகிய கொடி (வளருவதற்கான) ஊட்டச்சத்தை அளிப்பவர்
383. **भरुभयभरुभयमैकुकेरुलपुत्तु** — மடங்களின் ஆம்நாய (ஸம்ப்ரதாயங்களைத்
தெரிவிக்கும்) பெரியதான ஆம்நாய ஸேது என்ற கேரள (தேசத்தில்
ப்ரஸித்தமான?) நூலை யாத்தவர்
384. **पुत्तुत्तुपुभुपमिधुगभविवैरुः** — தீர்த்த முதல் புரீ வரையிலான சிஷ்ய
ஸம்ப்ரதாயங்களைப் பாகுபடுத்தியவர்
385. **मनैवृत्तुपुवमरुपुत्तु** — (அதில்) ஸரஸ்வதீ என்பதற்கு முன்பு
ஆநந்த இந்திர (என்ற இரு) பதங்களும் (தனித்தனியே பயன்படுத்தப்படுவதற்கான)
முறையையும் (வகுத்தவர்)
386. **मनैवृत्तुपुवमरुपुत्तु** — ஆநந்தமய (அதிகாரண தெளிவாக்கத்தால்
லௌகிக) ஆநந்தமே ப்ரஹ்மம் (என்று சொல்பவர்களை) ஜயித்து
புகழ்பெற்ற சொல்லாண்மையை உடையவர்

387. **வேஷ்வரணரி:** — யோகேஸ்வரரை ஆராதிப்பதில் முனைந்தவர்
388. **வே:** — யோக்யதை உடையவர்
389. **வேஷி வ:** — யோகம் அறிந்தவர்களில் சிறந்தவர்
390. **புஷி:** — செளக்கியமாக இருப்பவர்
391. **புஷி:** — அசைக்க முடியாதவர்
392. **பிஷ:** — மென்மையானவர்
393. **புஷ:** — அழியாதவர்
394. **புஷ:** — உறுதித்தன்மையே (வடிவமானவர்)
395. **பிஷி:** — (தன் சுய) நிலையில் (உறுதியாக நிற்கும் தன்மையை) அருள்பவர்
396. **புஷிபுஷிபுஷிபுஷி:** — (அவதார இறுதியில்) ஸத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) க்ஷேத்ரத்தில் ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றியவர்
397. **புஷிபுஷி** — உடலற்றவர் (உடலில் அபிமானம் அற்றவர்)
398. **புஷிபுஷிபுஷிபுஷிபுஷி:** — தாண்டுவதற்கரியதான எல்லையற்ற(தாகத் தோன்றும்) ஸம்ஸாரத்தின் எல்லைக்கு சேர்ப்பிக்கும் படகானவர்
399. **புஷிபுஷிபுஷிபுஷிபுஷி:** — (காமம் க்ரோதம் முதலிய) எதிரிக்கூட்டங்களை அறுத்ததால் சாந்தமடைந்த மனதினால் (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாகிய) தன் பெருமையை அறியக்கூடியவர்
400. **புஷிபுஷி:** — சோர்வில்லாதவர்
401. **புஷிபுஷி:** — ஒப்பிட முடியாதவர்
402. **புஷிபுஷி:** — நன்னடத்தை உடையவர்
403. **புஷிபுஷி:** — தரிசனம் செய்ய உகந்தவர்
404. **புஷிபுஷிபுஷிபுஷி** — (ந்யாயம் முதலிய) ஆறு தரிசனங்கள் (என்ற சாஸ்த்ரங்களில்) கரைகண்டவர்

405. ஸுஷ்ரீதமஹ: — (வர்ணம் பதம் முதலியதாக உபாஸனா ஸாஸ்த்ரங்களில் சொல்லப்படும்) ஆறு பாதைகளையும் கடந்த (ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றிய) மனதை உடையவர்
406. ஸுஷ்: — குற்றமில்லாதவர்
407. ஸுஷ்: — வெல்ல இயலாதவர்
408. ஸுஷ்: — தாபப்படாதவர்
409. ஸுஷ்: — மிரளச்செய்யவியலாதவர்
410. ஸுஷ்: — மீண்டும் பிறவாதவர்
411. ஸுஷ்: — சுத்தமானவர்
412. ஸுஷ்: — தன் சொருபத்தை அறிந்தவர்
413. ஸுஷ்: — விழிப்படைந்த ஆத்மாவானவர்
414. ஸுஷ்: — (பிறவி) பயன்பெற்றவர்
415. ஸுஷ்: — பலமான (ஞான) ப்ரகாசமுடையவர்
416. ஸுஷ்: — ஆபத்துகளில் இருந்து மீட்டெடுப்பவர்
417. ஸுஷ்: — (சம தமாத்ரி குணங்களால் ஞானத்தீ) நன்கு ஓளிரப்பெற்றவர்
418. ஸுஷ்: — (சமயோசித புதிய யோசனைகள் வரக்கூடிய) அறிவுக்கூர்மை நிறைந்தவர்
419. ஸுஷ்: — சாரத்தை அறிந்தவர்
420. ஸுஷ்: — எல்லா சாஸ்த்ரங்களையும் அறிந்தவர்
421. ஸுஷ்: — அமுதமனைய இனிய மொழியினர்
422. ஸுஷ்: — சூக்கும அறிவுள்ளவர்
423. ஸுஷ்: — மோகமென்னும் இருளுக்கு சூரியன் போன்றவர்
424. ஸுஷ்: — பெரும் புகழ்கொண்டவர்
425. ஸுஷ்: — பெரும் ஒழுக்கத்தை கொண்டவர்

426. भद्रैः — பெரும் காரியத்திறன் பெற்றவர்
427. भद्रभूतिः — பெரும் முனிவர்
428. भद्रवीथः — மதிக்கத்தக்கவர்
429. भद्रभट्टः — பெரும் (ஆத்ம) பலத்தை கொண்டவர்
430. भद्रभट्टः — மரியாதைக்கு உரியவர்
431. भद्रभूतिः — பெரும்பொருளை அறிந்தவர்
432. भद्रभूतिः — மாயா தத்துவத்தை அறிந்தவர்
433. भद्रभूतिः — பதட்டமில்லாதவர்
434. भद्रभूतिः — பூ மண்டலத்தில் (தலைசிறந்த) பண்டிதர்
435. भद्रभूतिः — தாயாரின் கருத்யத்திற்கு ஒத்தாசை செய்யாத கேரள ப்ராஹ்மணர்களுக்கு சாபம் அளித்தவர்
436. भद्रभूतिः — நினைத்தவுடன் (வருவேன் என்ற) தாயிடம் செய்த ப்ரதிஜ்ஞையை சொல்லியவண்ணம் செய்தவர்
437. भद्रभूतिः — (சிவனார் வடிவில்) ஸூர்யனையும் சந்த்ரனையும் கண்களாகக் கொண்டவர்
438. भद्रभूतिः — தோளைக் கடைந்ததால் உருவான அக்னியால் தாய்க்கு தீயளித்தவர்
439. भद्रभूतिः — ரஸமான (பரம்பொருளை) அறிந்தவர்
440. भद्रभूतिः — வேத ஸாஸ்த்ரங்களின் சுவையை அறிந்தவர்
441. भद्रभूतिः — ஆசை துவேஷம் ஆகியவற்றை நீக்குபவர்
442. भद्रभूतिः — மகத்தானவர்
443. भद्रभूतिः — ராஜ யோகி
444. भद्रभूतिः — விரும்பியதை அடைந்தவர்
445. भद्रभूतिः — ஆசைகள் இல்லாதவர்

446. भाउवङ्गलः — அன்னை போன்ற அன்புடையவர்
447. कामउत्कलापूककायउरनिवेमनः — காம ஸாஸ்த்ர கலையை அறிய (ஒரு இறந்த அரசனின் சரீரத்தில்) பரகாய ப்ரவேசம் செய்தவர்
448. कवुरङ्गविनिम्नलङ्कैरङ्कविपुषः — (அவ்வடிவில்) சிறந்த காவ்யத்தை நிர்மாணித்ததால் உயர்ந்த கவி என்ற புகழைப் பெற்றவர்
449. भापुटपुटमिडिः — இனிமையில் முன்னிற்கும் சொற்களைக் கொண்டவர்
450. भपराणीमभानिउः — மதுரையை (ஆண்ட) அரசனால் மதிக்கப்பட்டவர்
451. ऐडिःपुरेमविउः — ஜ்யோதிபுரத்தின் அரசனால் வணங்கப்பட்டவர்
452. पारेण्यपुरमिडिः — ஜயபுரத்துக்கு அப்பாலும் வசித்தவர்
453. विरुपाङ्गमुलामेवी — விருபாக்ஷ தலத்தில் நெடிது தங்கியவர்
454. विण्यापृप्रीमरः — விஜயபுரத்திற்கு (விஜயம்) செய்தவர்
455. विमिमाटमविरुडिः — விதிஸா தேசத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
456. विम्वनापपमपिषः — விஸ்வநாதபுரியான (காசியை) விரும்பியவர்
457. पाएलीपुङ्गभुनः — பாடலிபுத்திரத்தில் தங்கியவர்
458. विष्णुपाटपुमेवनः — (கயா) விஷ்ணுபாதத்தை நன்கு சேவித்தவர்
459. गवावरमभुलभुः — கயாவில் ஆலமரத்தடியில் தங்கியவர்
460. रममलनिरुमणीः — பத்ராசலத்தில் ஆழ்ந்த அபிமானமுள்ளவர்
461. वृपुवनपुमसृग्री — பிருந்தாவன பகுதியில் சஞ்சரித்தவர்
462. वृभामलविलाम्यः — வ்யாஸாசல குறையையும் அண்டியவர்
463. उङ्गरकुङ्गविरुडिः — ஓங்கார குண்டத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
464. भलि कङ्गभपुणीः — மல்லிகார்ஜுனத்தில் ஆழ்ந்துள்ள மனத்தினர்
465. मीपङ्गनपङ्गभुमिपुषङ्गनिपेविउः — திருவையாற்றில் சிவபெருமானின் அடியார்கள் குழுவினால் வணங்கப்பட்டவர்
466. मङ्गेविलगुङ्गभः — அஹோபில குகையில் ஓய்வெடுத்தவர்

467. कभलाः — தாமரைக்கண்ணர்
468. कलानिधिः — கலைகளுக்கு இருப்பிடமானவர்
469. कलिशंभी — கலியை துவம்சம் செய்பவர்
470. कभरूपः — தன்னிச்சையில் உருவை மாற்றிக்கொள்ளக்கூடியவர்
471. कभरारः — விரும்பிய இடத்திற்கு செல்லவல்லவர்
472. कलभयः — கலைகளே வடிவமானவர்
473. परमेशी — பரம்பொருளில் நிலைத்தவர்
474. वसपुनः — ப்ராணனை வசப்படுத்தியவர்
475. कभानीमवैश्वकः — காமாக்ஷியை சேவிக்க விரும்பியவர்
476. पुनः — உயிர் அளிப்பவர்
477. पुनी — அன்பிற்குரியவர்
478. पुः — வலுவானவர்
479. भवउपुउपुः — எல்லா சாஸ்த்ரங்களிலும் ஸ்வதந்த்ரமாக ஸஞ்சரிக்கவல்ல புத்தியைக் கொண்டவர்
480. उपुः — ஆத்ம தளைகளற்றவர்
481. नभिकउपुः — நாஸ்திகர்களுக்கு முடிவுகட்டியவர்
482. पुः — மிக்க புத்திமான்
483. मुभनशुविः — (யோக) ஆஸன மார்க்கத்தை அறிந்தவர்
484. नृपुकेः — ஜைனர்களின் அத்துமீறல்களை பொசுக்கியவர்
485. नृपुनिधिः — பெருந்தன்மைக்கு இருப்பிடமானவர்
486. नृः — பாதிக்கப்படாதவர்
487. नृः — சாமர்த்தியமானவர்
488. नृपुः — தென் திசையிலிருந்து (வந்த) ஸித்தர்

489. कालव्यविति — முக்காலமும் அறிந்தவர்
490. मुमुक्षुः — இறை நம்பிக்கையாளர்
491. मुनिः — கட்டளை பிறப்பிப்பவர்
492. मुनिः — சாதாரண மனிதனினும் அதிக சக்தி உடையவர்
493. प्रमुखापलिकभउत्तुः — காபாலிக மத வழிமுறைகளை த்வம்ஸம் செய்தவர்
494. कभिनीविभापः — (லௌகிக) ஆசைகளில் ஈடுபட்ட பெண்களிடம் பாராமுகமானவர்
495. कभुः — நண்பனாக கருதத்தக்கவர்
496. कभुत्तुः — கர்மானுஷ்டானங்களின் பலனை எதிர்பாராதவர்
497. कभुः — கர்மானுஷ்டானங்களுக்கு ஹிதமானவர்
498. कृती — செய்யவேண்டியவற்றை செய்துவிட்டவர்
499. कलुगुमीलः — கல்யாண குணங்களை உடையவர்
500. क्रिभुः — செயல்களிலிருந்து விடுபட்டவர்
501. कृपायः — கிருபையால் நிறைந்தவர்
502. कीर्तिभावा — புகழுடையவர்
503. कुवेगमपुएउएगङ्गः — யோக லிங்க பூஜையை செய்தமையால் உலக மக்களைக் காத்தவர்
504. पभिल्लपुराएमीगलच्चनपुपाचिउः — தம்மில்லபுரம் என்ற ராஜ்யத்தில் பாலா (த்ரிபுரஸுந்தரியை) அர்ச்சிக்கும் அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர் (?)
505. वेएउएभुः — வேதாந்தத்தில் சூரியன் போன்றவர்
506. एनएउः — ஞானத்தில் சந்திரன் போன்றவர்
507. एवृएवः — சகல ஐஸ்வர்யங்களையும் பொழிபவர்
508. नेपालमहुपालवृधवेपमकु — நேபாள தேச அரசனான வருஷ தேவனுக்கு உபதேசித்தவர்

509. कैलाभकुम्भसूयमुपवृत्तविधिः — கைலாஸ பர்வதத்தில் சிவனை பூஜிக்கும் வழிமுறை வகுத்தவர்
510. भैरवउत्थितिष्ठाभपदः — புத்தமதக்கூட்டத்தை நீக்குவதில் திறம்பெற்றவர்
511. वैराग्यैपकः — வைராக்யத்தை போதிப்பவர்
512. भृणीभर्त्तुः — அறிவாளிகளுக்குள் மணி போன்றவர்
513. दिव्यदक्षी — தெய்வீக (ஞான) த்ருஷ்டி உடையவர்
514. देवदेवुरुश — (பூமியில் அதர்மம் பெருகியதால் ஏற்பட்ட) தேவர்களின் வருத்தத்தை அகற்றியவர்
515. मरुभः — குழப்பம் இல்லாதவர்
516. पुमवृकभलदृष्टरिद्राक्षणीनिधिः — ப்ரஸன்னமடைந்த லக்ஷ்மியால் ஏழை அந்தணப்பெண்ணுக்கு செல்வம் கொடுப்பித்தவர்
517. मधुलकुम्भपापृभलुभिद्राक्षुः — முழுதும் மலர்ந்த பூவனைய மெல்லிய அரும்பு போன்ற புன்முறுவலை உடையவர்
518. विष्णुपरिपुत्रैवाभिपुङ्गवभंसयः — சிந்முத்ரையாலேயே தலைசிறந்த சீடர்களின் சந்தேகங்களை விரட்டியவர்
519. हरिहरिवरेभम्भुभाङ्कउरैवः — (நரஸிம்ஹரின் மனமுவக்கும் வாக்கின்படி) சிங்கத்தில் பயங்கர குரலாகிய அட்டஹாஸத்தால் பஸ்மமாகிய காபாலிகனுக்கு (உடலைக்கொடுக்க முன்வந்தவர்)
520. मभामिउमृणवृडुपाङ्कानिउपुणः — தன்னை அண்டிய ஸுதன்வா (என்ற அரசனால்) தமது பாதுகைகளுக்கு நித்ய பூஜை செய்யப்பெற்றவர்
521. नभःमैधी — நமஸ்காரங்களையெல்லாம் பெறத்தகுந்தவர்
522. नभपरः — (பகவானின்) நாமங்களை முக்கியமாகக் கொண்டவர்
523. नविउमैधविष्णुः — தேவ லோகம் முழுவதும் மகிழுற வைத்தவர்
524. एकदक्षी — ஒரு தண்டம் உடைய (ஸந்ந்யாஸ ஸம்ப்ரதாயத்தைச்) சேர்ந்தவர்
525. कषायी — கஷாயம் தரித்தவர்

526. ஸ்ரீ — (தலையை) முண்டனம் செய்து கொண்டவர்
527. ஸ்ரீமஹி: — பெளத்தத்தை கண்டித்தவர்
528. ஸ்ரீமஹி:மிஹிமஹி: — சித்தர்கள் என்று (தம்மைத்தாமே சொல்லிக்கொள்ளும்) திகம்பரர்களின் சித்தாந்தங்களை நசுக்கியவர்
529. ஸ்ரீமஹி: — மல்லிகைகளைப் போன்ற வெண்ணிற பற்களை உடையவர்
530. ஸ்ரீமஹி: — பெண்களின் நினைப்பிலிருந்து மிகவும் விலகியவர்
531. ஸ்ரீமஹி: — காமத்தின் எதிரி வடிவானவர்
532. ஸ்ரீமஹி: — ஆநந்தமும் உதஸாஹமும் கொண்டவர்
533. ஸ்ரீமஹி: — விரும்பத்தக்க குணங்கள் இருக்கும் சுரங்கம் போன்றவர்
534. ஸ்ரீமஹி: — (சந்த்ரனிலிருந்து உருவான) நர்மதா நதிக்கரையில் ப்ரஸந்நமான கோவிந்த (பகவத்பாதருக்கு) ஸேவை செய்தவர்
535. ஸ்ரீமஹி: — மாலிகாப்ரியன் என்ற சாளுக்ய அரசனால் (கனகாபிஷேகாதிகளால்?) உடல் முழுதும் பூஜிக்கப்பட்டவர்
536. ஸ்ரீமஹி: — (நான்கு) ஆசிரமங்களை தாண்டிய நிலையை அடைந்தவர்களில் தலைசிறந்தவர்
537. ஸ்ரீ: — (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வமாக (தாமே ஆனவர்)
538. ஸ்ரீமஹி: — அண்டியவர்களுக்கு கற்பக வருஷமானவர்
539. ஸ்ரீமஹி: — களைப்பற்றவர்
540. ஸ்ரீமஹி: — காற்றினால் தூண்டப்பட்ட (அலைகள் கொண்ட நதிகளில்) ஸ்நானம் செய்தவர்
541. ஸ்ரீமஹி: — (காலடியில்) கும்பமுனியை தரிசித்தவர்
542. ஸ்ரீமஹி: — தாமாகவே குனிந்து மரங்களின் நுனிக்கிளைகள் அர்ப்பணித்த பழங்களை உண்டவர்

543. वद्धल्लारुक्कैत्तुत्तीरभारश्चभट्टः — பொழியும் மேகங்கள் கொட்டும் நீர்ப்பெருக்குடன் (கூடிய) பாதைகளில் (பாதிப்பின்றி) செல்பவர்
544. मभुल्लसूवस्सल्लद्वीवीवणम्भः — கொழுந்துவிட்டெரியும் காட்டுத்தீ (விலகி) அளித்த பாதையால் காட்டை அடைந்தவர்
545. मरुभृगनिवृत्तभरणीयभुक्तिः — ஹிம்ஸிக்கக்கூடிய மிருகங்கள் (தாமே) விலகியளித்த செல்லவேண்டிய பாதைகளில் ஸஞ்சரித்தவர்
546. मरुत्कुलपवः — காற்றினால் எப்போதும் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
547. वभिष्ठः — (நீங்காத) செல்வம் உடையவர்களில் சிறந்தவர்
548. वगृउः — மௌனமாக இருப்பவர்
549. वरः — சிறந்தவர்
550. मभीरुवद्धभृउः — (செல்லும் பாதையில் அந்தந்த ஊர்மக்களின் வினையால் ஏற்பட்ட) அஸுப அடையாளங்கள் தாமே அடங்கப்பெற்றவர்
551. पंभुत्तुपषाउरः — தூசிகளற்ற (சுத்தமான) பாதைகளில் சென்றவர்
552. उधारीकरभुक्षिष्टपिष्टाउरुतिः — பனி (அல்லது நதி/மழை நீர்) தெறித்துபட்டதனால் மிருதுவான (சத்து) மாவை (மட்டும்) சாப்பிடுவதை வழக்கமாகக் கொண்டவர்
553. मकरपारीभट्टभपूरेतिः — மகரந்தத் (தேன்) வழிவது போல் மதிக்கத்தக்க இனிமையான சொற்கள் கொண்டவர்
554. मरुकविः — பெரும் புலவர்
555. कभल्लसूवकेरीउकल्लैलिनीरः — அலைபுரளும் (நர்மதா) நீர்ப்பிரவாஹத்தை கமண்டலுவுக்குள்ளே அடக்கியவர்
556. मभुल्लभुक्तिंमुकात्तीरभरभुक्तिः — (நீரில் இறங்கியும்) அழியாத திருநீறும் நனைந்த வஸ்திரத்தின் நுனிப்பகுதியில் மீன்களும் கூடியவர்
557. वैलाणभट्टभुतिः — எல்லைக் கரையில் ஸமுத்ரத்தை விரட்டியவர் (கதை தேட வேண்டும்)

558. भुवमङ्गीवनेः — இறந்தவர்களை உயிர்ப்பிக்கவல்ல பார்வையை உடையவர் (கோகர்ணத்தில் அவ்வாறு ஆசார்யாள் செய்ததாக சரித்ரம்)
559. भद्रवृत्तिप्रभवः — பெரும் வியாதிகளை குணமாக்குபவர்
560. भद्रः — செருக்கை அழிப்பவர்
561. भगवमृत्ता — மிருகங்களை தன்வசம் கொண்டவர்
562. एतद्वृत्तिप्रभवः — ஜடம் கூன் உடையவர் முதலியோரிடமும் (கருணையுடன்) ஸம்பாஷித்தவர் (ஹஸ்தாமலகர் ஜடம் போல் காட்சியளித்தவர்)
563. लक्ष्मणः — கொடிகளிலிருந்து (தானாக உதிர்ந்த) பூக்களால் அர்ச்சனை செய்தவர்
564. भैवभिकक्षेत्रः — (காட்டுப்பகுதிகளில் ஸஞ்சரிக்கையில்) ஓநாய்க்கூட்டங்கள் முன்செல்லப்பெற்றவர்
565. भैवभिकक्षेत्रः — (இரவில்) உறங்கவில்லையா என்று ஆந்தைகளால் கேட்கப்பெற்றவர்
566. भैवभिकक्षेत्रः — (காலையில்) காக்கைகளால் ஸுப்ரபாதம் பாடப்பெற்றவர்
567. भैवभिकक्षेत्रः — (பாறைகள் முதலியவற்றிலிருந்து விலகி) செளகரியமாக அமர ஸர்ப்பங்களால் ஆஸனம் அளிக்கப்பட்டவர்
568. भैवभिकक्षेत्रः — (மழைக்காலத்தில்) இனிய பாடகர்களின் கோஷ்டியை உருவாக்கும் தவளைகளால் (உபசரிக்கப்பட்டவர்)
569. भैवभिकक्षेत्रः — தேனீக்களால் (தேனாகிய மதுபர்க்கம் அளித்து) அதிதி உபசாரம் செய்யப்பட்டவர்
570. भैवभिकक्षेत्रः — புலிகளால் வரவேற்பு சொல்லப்பெற்றவர்
571. भैवभिकक्षेत्रः — (பாறை முதலியவற்றிலிருந்து எழுந்துகொள்ளும்போது அப்பால் சென்று விழுவதால்) தேள்களால் சரியாக உதறிக்கொண்டீரா என்று நிம்சயம் செய்விக்கப்பட்டவர்
572. भैवभिकक्षेत्रः — நீர்வீழ்ச்சிகளில் நன்கு நீராடியவர்

573. **மேவதூஷ்ணிகாபூட:** — மேகங்களால் எண்ணெய் தேய்த்துக்கொள்வது போல் (உடலைப் பளபளக்கவைக்கும் மழை) பொழிவிக்கப்பட்டவர்
574. **மேவீரீடிகவாஸுல:** — பெருங்காற்றுகளால் நன்று விசிறிவிடப்பட்டவர்
575. **மேவநாஸுபிகமூ:** — மரங்களால் வெயிலிலிருந்து நன்கு பார்த்துக்கொள்ளப்பட்டவர்
576. **மேவாமிடிகபஸூமூ:** — ஸிம்ஹங்களைப் போல் (கம்பீரமாக) அமர்பவர்
577. **மேவநூமிகவாஸும:** — மலைப்பாம்புகளைப் போல் (ஒரு முறை) போதுமான அளவு உண்டு (வெகு காலம் த்ருப்தியுடன்) இருப்பவர்
578. **மேவிராமிகமஹே:** — மதம்பிடித்த யானைகளானைய அழகிய புன்முறுவல் உடையவர்
579. **மேவநூபிதநூசூ:** — குறைகளில் ஸுகமாக தங்கியவர்
580. **மேபூபிதககாஸூ:** — (ஆங்காங்கு) எளிதில் கிளம்பி போவதற்கு பெருங்காட்டினால் (நல்ல பாதை அளிக்கப்பட்டவர்)
581. **மேமாஸுநிகமேகல:** — காக்கைகளால் சுப சகுனமாக கரையப்பெற்றவர்
582. **மேவாபீடிகவேமசூ:** — குளங்களில் த்ருப்தியாக நீர் பருகியவர்
583. **மேரூககலேரூ:** — பழுத்த மரங்களினால் நன்கு உண்டவர்
584. **மேவிலிபூககூரூ:** — பூமி தூசி (உடல்முழுதும் சந்தனம்போல்) நன்கு பூசப்பெற்றவர்
585. **மேவநூபகபாஸூ:** — கந்தராடையை உயர்ந்த வஸ்தரம் போல் தரிப்பவர்
586. **மேரூபிதிககூலூ:** — ஜபங்கள் நன்கு நடக்கின்றனவா என்று (விசாரிப்பதுபோல் இடையூறு செய்யாமல்) கரடிகள் அப்பால் செல்லப்பெற்றவர்
587. **மேவரீடிககாஸூ:** — சாதக (பறவைகள் குரல் கொடுப்பதால்) பாராட்டப்பட்ட (உபநிஷத் முதலிய) உயர்ந்த பாராயணம் செய்தவர்
588. **மேமேவீடிககேபூ:** — நன்கு உறங்கினீர்களா என்று குரங்குகளால் (வந்து விசாரிக்கப்பட்டவர்)
589. **மேவநூபிககேகில:** — அழகிய பாட்டுகளால் குயில்களால் போற்றப்பட்டவர்

590. **பௌபுரிக்ஷாவிதா** — (காலையில் இங்குமங்கும் ஸஞ்சரிக்கையில்) முள்ளம்பன்றிகளால் (எங்கள் மேல் மோதிக்கொள்ளாமல் இருக்க) நன்கு விழித்துக்கொண்டிருக்கலா என்று விசாரிக்கப்பட்டவர்
591. **பௌபுரிக்ஷாவிதா** — பகல் காரியங்களுக்கு சூரியனால் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
592. **பௌபுரிக்ஷாவிதா** — இரவு காரியங்களுக்கு சந்திரனால் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
593. **பௌபுரிக்ஷாவிதா** — பகல் இரவும் சேர்ந்து அனுகூல பொழுதுகள் அளிக்கப்பட்டவர்
594. **மகா** — (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) வாக்கு அற்றவர்
595. **மகா** — (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) உடலற்றவர்
596. **மகா** — (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) மனம் அற்றவர்
597. **மகா** — தண்டம் ஏந்தியவர்
598. **மகா** — தவைதம் எனும் இருளுக்கு சூரியன் போன்றவர்
599. **மகா** — (ஆளுகை, தர்மம், புகழ், செல்வம், ஞானம், வைராக்யம் ஆகிய) ஆறு குணமுடைய (பகவத்ஸ்வரூபமானவர்)
600. **மகா** — (இருக்கலாம், இல்லாமல் போகலாம் முதலிய) ஏழு விதமாக “இருக்கலாம்” என்று சொல்லும் (ஜென மதத்தை) உடைத்தவர்
601. **மகா** — எட்டு (பெரிய) சித்திகள் உடையவர்
602. **மகா** — முக்கண் உடைய (அம்பாள்/சிவன்) வடிவினர்
603. **மகா** — நான்கு புருஷார்த்தங்களை (பொழியக்கூடிய) காமதேனுவானவர்
604. **மகா** — ஞானத்தை (உணவுபோல்) பரிமாறக்கூடியவர்
605. **மகா** — ஸ்ரீ நவாவரண அர்ச்சனை முதலான வித்யைகளுக்கு ஆசிரியர்
606. **மகா** — (கர்ப்பவாஸம், பாலியம் முதலிய ஸரீர்) நிலைகள் அற்றவர்

607. ஷரஃ — வடிவழகு குன்றாதவர்

608. ஷ்ரீகாந்தமிரிபயபிபிஷ்ணுமஃ — பதினோரு முறை ருத்ரம் ஜபம் செய்வித்து பிறைசூடிக்கு அபிஷேகம் செய்வித்தவர்

609. நிஃரஃ — (தற்) பெருமையற்றவர்

610. ஸ்ரீமஃ — (உலகச்) செயல்களாகிய ப்ரவாஹத்தை விடுத்தவர்

611. நிஃமஃ — ஒப்பில்லா ஆனந்தத்தில் எப்போதும் திளைத்திருப்பவர்

612. ஷரஃ — (லௌகிக) ஸுகத்தை நிராகரித்தவர்

613. நிஃரஃ — முடிவில்லாதவர்

614. ஷ்ரீமஃ — வலியற்றவர்

615. ஷ்ரீமஃ — (தனக்கென தனி) இடம் வைத்துக்கொள்ளாதவர்

616. நிஃமஃ — பலவித கட்டுப்பாடுகளை திறம்பட நிர்வகிப்பவர்

617. நிஃமஃ — நூற்றுக்கணக்கான குழாம்களுக்கு குற்றமற்ற அவைத பாதையைக் காட்டியவர்

618. ஷ்ரீமஃ — ஸங்க்ஷேப ஸாரீரகம் செய்த ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு (தமக்கு பிறகு காஞ்சீ காமகோடி பீட) ஆஸனத்தை அளித்தவர்

619. ஷ்ரீமஃ — நைஷ்கர்ம ஸித்தியை செய்தவரும் வார்த்திகத்தை செய்தவருமான ஸுரேஸ்வரரை (ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு முன்) அடுத்தவராக்கியவர்

620. ஷ்ரீமஃ — எரிந்துபோன உரையின் ஐந்து பாதங்களை ஒப்பித்து பத்மபாதரை சந்தோஷப்படுத்தியவர்

621. ஷ்ரீமஃ — ஆத்ம தத்துவத்தை உள்ளங்கை நெல்லிக்கனி போல் கொண்ட ஹஸ்தாமலகருக்கு துறவறமளித்தவர்

622. ஷ்ரீமஃ — மிகவும் சுமாரான (திறம்கொண்டிருந்த) ஆநந்தகிரி (என்ற சீடர்) தோடகம் (எனும் யாப்பில் குருவைத் துதித்து

- 78

637. उडुभृमिभरुवृरुपवर्ग — (ஸாமவேதத்தின்) தத்த்வமஸி (என்பதை) முதலாகக் கொண்டு (உபதேசித்த) மஹா வாக்கிய வடிவானவர்
638. ऐडिङ्करः — (இரண்டாம் ஆம்னாயத்திற்கு) ஜ்யோதிர் மடத்தை நிறுவியவர்
639. ऐडिङ्गीपीन्दिमरुता — ஜ்யோதிஷ்மதீ பீடத்துக்கு வழிகாட்டியவர்
640. गन्धम्भम्भुनः — பதரிகாஸ்ரமத்தை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
641. मलकनृवगारुनः — அலகாநந்தாவில் நீராடியவர்
642. मुषवक्त्रिरेवैर् — அதர்வாங்கிரஸ வேதத்தை அறிந்தவர்
643. मीपुल्लगिरिमैवकः — ஸ்ரீ பூர்ணாகிரி (எனும் தேவியை) சேவித்தவர்
644. गैवत्तनभीनघः — (மூன்றாவது ஆம்னாயத்திற்கான) கோவர்த்தன மடத்தின் தலைவர்
645. गिरिधैगपण्मयः — (தஸநாமிகளுள்) கிரி என்ற யோகபட்டத்தை (சில ஸிஷ்யர்களுக்கு) ஆஸ்ரயித்தவர்
646. पुषेडुभमङ्करी — புருஷோத்தமரின் நல்ல க்ஷேத்ரத்தில் இருந்தவர்
647. विमलपीङ्कलकः — விமலா பீடத்தை முறைப்படுத்தியவர்
648. मउनृः — (உலகாயத ஆனந்தத்தை விட) நூறு நூறு மடங்கு ஆனந்தம் கொண்டதாக (உபநிஷத்தில் வர்ணிக்கப்பட்டவர்)
649. मउैः — (அவ்வாறே) நூறு நூறு மடங்கு ஸக்திகளையும் கொண்டவர்
650. र्मेन्विविनिर्गुः — பத்து இந்திரியங்களையும் அடக்கியவர்
651. मीडुलिउममीमृमङ्गगिरिमृयी — (நான்காவது ஆம்னாயத்திற்கு) அழகு கொழிக்கும் தேஸமாகிய ரும்யஸ்ருங்க கிரியில் தங்கியவர்
652. मरुवमनापृउवृपृपीन्दिरेरुः — வ்யாக்யான பீடத்தில் அமரும்படி ஸாரதையின் வாக்கினால் அருளப்பட்டவர்
653. रामपुपुर्गरी — ராமசந்த்ரபுரம் என்ற க்ஷேத்ரத்தில் வசித்தவர்
654. उङ्गुमृउएम्भी — துங்கையும் பத்ரையும் (கூடுமிடத்தின்) தடத்தில் ஆஸ்ரமம் அமைத்தவர்

655. **वराहदेवताभारमार्गद्वयमतिरुता** — வராஹரை தேவனாகவும் ஸாரதையை ஸக்தியாகவும் கொண்டவர்
656. **सुरिवरी** — மிகுதியான (செல்வச்செழிப்பைத்) தவிர்ப்பதை (வ்ரதமாகக் கொண்டவர்)
657. **कृष्णवैद्यी** — க்ருஷ்ண யஜுர் வேதத்தை பயின்றவர்
658. **मीरगीपदः** — பெருமைக்குரிய பாரதி எனும் பட்டத்தை (ஸிஷ்யர்களுக்கு அளித்தவர்)
659. **विष्णुकापिष्ठनभुमलानिकरैमदका** — விபண்டக முனிவரின் இருப்பிடத்தில் உள்ள மலஹானிகரேஸரை தரிசித்தவர்
660. **विष्णुभक्तदेवभरुनीयपदम्यः** — (அதே கர்ணாடகத்தில் ஹம்பியில்) விருபாக்ஷ (க்ஷேத்ரத்தில் உள்ள) மஹாதேவரின் உயர்ந்த கோவிலை ஆம்ரயித்தவர்
661. **भनीधिमन्त्रीभारुभैलाभयभक्तगुरुः** — பண்டிதருலகு மதிக்கத்தக்க (ஐந்தாவது) மூல ஆம்னாயத்தின் (ஸ்தாபகரான) மஹாகுருவானவர்
662. **प्रपृष्टीष्टावष्टेष्टीष्टाभयमिभैसिकः** — கிழக்கு, மேற்கு, தெற்கு, வடக்கு (ஆகிய மற்ற) ஆம்னாயங்களுக்கு முதல் ஆசானாகக் கருதப்படுபவர்
663. **प्रपृष्टाभयविष्टुष्टुभुमलकम्पुः** — கிழக்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ஹஸ்தாமலகரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
664. **प्रिष्टाभयमन्त्रेसन्नविष्टुभन्नः** — மேற்கு ஆம்னாயத்திற்கு உத்தரவிடப்பட்டதால் (பத்மபாதர் எனும்) சனந்தனரை சந்தோஷித்தவர்
665. **सवपृष्टाभयनिष्ठपुष्टीष्टावष्टिः** — தெற்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ப்ருத்வீதவரால் வணங்கப்பட்ட திருவடியினர்
666. **उष्टीष्टाभयसन्नविष्टुगिष्टिविष्टुः** — வடக்கு ஆம்னாயத்தில் ஏற்படும் ஆனந்தத்துடன் ஆனந்தகிரியால் வணங்கப்பட்டவர்
667. **कभकेपीपीपडिः** — காமகோடி பீடத்தின் அதிபதி
668. **कभवेगवडीपः** — கம்பா வேகவதீ நதிகளுக்கு இடையில் சஞ்சரித்தவர்

- 81

683. **மாபூயேனி:** — (ஈசனார் வடிவில்) ஸாஸ்த்ரங்களின் பிறப்பிடம்
684. **மமவ்யயீ** — (முரணாகத் தோன்றும் வேதாந்த வாக்யங்களை) ஒருங்கிணைத்தவர்
685. **புஷ்பபூஷ்ணலிங்கீ** — தெளிவாகவும் தெளிவின்றியும் பரம்பொருளைக் குறிப்பவற்றை (அறிந்தவர்)
686. **மாஹுவேகவிமமகூடா** — ஸாங்க்ய யோக (ஸாஸ்த்ரங்களை) பரிசீலித்தவர்
687. **வையகரணீமேரீ** — இலக்கணம் கூறுபவர்களின் கருத்தை பரிசோதித்தவர்
688. **வமிஷு** — வசிஷ்டர் (போல் பிறரின் தாக்குதலை எளிதில் சமாளித்தவர்)
689. **கருமபூ:** — (பரம்பொருள் வடிவில்) விண்ணை ஆடையாக கொண்டவர்
690. **சேதமீயவரேமூரீ** — ந்யாய ஸாஸ்த்ரத்தின் (குறைகொண்ட) வாதங்களை முடக்கியவர்
691. **வீமேதிகமடபரு:** — வைசேஷிகர்களின் கருவத்தை அடக்கியவர்
692. **சேதேநிமடேஹீ** — புத்த மதத்தினரின் செருக்கை சீர்குலைத்தவர்
693. **வீமிநீயகூடஹீ** — ஜைமினீயத்தின் குறுகிய பார்வையை முறியடித்தவர்
694. **பிங்மபரவ்யயு:** — திகம்பரர்கள் கொண்டு வந்த கடைசி வாதங்களையும் அழித்தவர்
695. **புபூபாபுபுதிக:** — பாசுபதர்களின் செயல்பாடுகளை சிதறடித்தவர்
696. **சுதாஹ்வநிநூ** — ஆத்மா (இல்லை, அனைத்தும்) சூன்யமே என்னும் வாதத்தை வீழ்த்தியவர்
697. **பிதூகாவதாப:** — (ஸங்கர்ஷணன் முதலிய நான்கு வடிவங்களே இறைவனின் உண்மை வடிவம் என்ற) பாகவத மதத்தை வென்றவர்
698. **விநேநிநிதூபேநூயகமீரகபூதா** — வலுத்த ந்யாயங்களால் கம்பீரமாகவுள்ள பாஷ்யத்தை விளையாட்டாக இயற்றியவர்
699. **தூபூதஸீவரரி:** — ஜீவனின் சரிதத்தை விளக்கியவர்
700. **விஷ்ணுவிமார:** — பிரபஞ்சத்தின் தோற்றத்தை கற்றுணர்ந்தவர்

701. பிழிபிபாவிசுரஃ — இருப்பின் எல்லைகளை பாகுபடுத்த தெரிந்தவர்
702. புலயாபுகாமக: — பிரளயத்தின் பொருளை தெளிவாக்கியவர்
703. ம்மாபுத்புமபுதா — சம்சாரத்தின் தத்துவத்தை அலசியவர்
704. மாபுத்புநிபுபு: — மாயா தத்துவத்தை நிரூபணம் செய்தவர்
705. மபுலாவிசுரஃ — அவித்யையால் ஏற்பட்ட பிரமையை அதன் காரணத்துடன் வேரறுப்பதில் வல்லுநர்
706. ம்மாபுத்புமபுதா — ஸம்ஸாரத்தைத் தாண்டும் வழியைக் காட்டுவதில் மிகவும் திறமுள்ள வாக்கினர்
707. ரமிகா ஸுரஃ — (அத்வைத) ரஸிகர்களுக்கு உவகையளிக்கும்படி மஹாவாக்யங்களை செம்மையுற விளக்கியவர்
708. புநிபுநாபுமபுத்பு: — உள்ளர்த்தத்தை முக்கியமாகக் கொண்ட அமருக ஸத ம்லோகி என்ற நூலை இயற்றியவர்
709. புநிபுநாபுமபுத்பு: — ப்ரஹ்ம ஸூத்ரம், உபநிஷதம், கீதை ஆகிய ப்ரஸ்தானங்களுக்கு விரிவுரை எழுதியவர்
710. புநிபுநாபுமபுத்பு: — உள்ளிருக்கும் பிரமத்துடன் ஐக்கியம் பெறும் வழியைக் காட்டியவர்
711. ம்மாபுத்புமபுதா — மோக்ஷத்தின் பாதையைக் காட்டியவர்
712. நிரபுநாபுமபுத்பு: — எப்போதும் உபநிஷதங்களின் சொற்றொடர்களுையே சிந்தித்து வந்தவர்
713. வேதாந்தமெனும் அரண்யத்தில் ஸிம்ஹம் போன்றவர்
714. தத்துவ ஞானத்தில் பரந்த சமுத்திரமனையவர்
715. இளைஞர்
716. (ஆனால்) இளம் பெண்களிடம் ஈடுபாடில்லாதவர்
717. சந்த்ரனைப் போன்ற பொலிவுடையவர்

718. **௮௧௧௧௧௧௧௧** — கடை தேற்றும் பிரம்ம தத்துவத்தை அறிந்தவர்
719. **௮௧௧** — தவமியற்றியவர்
720. **௮௧௧௧௧** — தவசிகளைப் பின்பற்றுபவர் (அல்லது) தவசிகளான சீடர்களை உடையவர்
721. **௮௧௧௧௧௧௧௧** — (உடல், இயற்கை, பிராணிகள் ஆகிய) மூன்றாலும் ஏற்படும் இன்னல்கள் அற்றவர்
722. **௮௧௧௧௧௧௧௧௧** — மிருதுவான சொற்களால் (மாற்றுக்கருத்துகளை) நிராகரித்தவர்
723. **௮௧௧௧** — (மனவடக்கம் மற்றும் புலனடக்கம் ஆகிய) அலங்காரங்களைக் கொண்டவர்
724. **௮௧௧௧௧** — (உலக ரீதியில்) மிகவும் மதிக்கத்தக்கவர்களால் நாடப்பட்டவர்
725. **௮௧௧௧** — (தன் சொருபமாகிய) ஆத்மாவை (உலகின் காரணமான ப்ரஹ்மமாக) அறிந்தவர்
726. **௮௧௧௧௧** — ப்ரஹ்மமாகிய (உலகின் காரணத்தை தன் சொருபமான ஆத்மாவாக) உணர்ந்தவர்களுள் சிறந்தவர்
727. **௮௧௧** — வேதத்திற்கு ஹிதமானவர்
728. **௮௧௧௧** — தாமே ப்ரஹ்மமாக ஆனவர்
729. **௮௧௧௧௧௧௧௧௧** — தனது இருப்பிடமாக விரும்பிய (மதிக்கத்தக்க) காஞ்சியிலேயே நிலைத்தவர்
730. **௮௧௧௧௧௧௧௧** — புண்ணிய தலங்களுக்கு யாத்திரை செய்தவர்
731. **௮௧௧௧௧௧௧௧௧** — (ஆறாவது) ஊர்தவ (மேலான) ஆம்னாயத்தின் தத்துவப் பொருளை உணர்ந்தவர்
732. **௮௧௧௧௧௧௧௧** — (தானொன்றே இருப்பதாகிய) கைவல்யமெனும் க்ஷேத்ரத்திற்கு விஜயம் செய்தவர்
733. **௮௧௧௧௧௧௧௧** — சுத்தமான மனதையே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்

734. புநெஹுலமஹாரீ — (உலகிற்கு உச்சியான) மேருவின் அடியை (மடமாகக் கொண்டு) ஸஞ்சரித்தவர்
735. ஹயமஹிவிஹவ: — மாயையை (பீடத்தின்) ஸக்தியாக பூஜித்தவர்
736. மஹாநாஹிஹாரீ — (இந்தர ஸரஸ்வதி முதலிய பட்டங்களுக்கு பதில்) ஸத்யம் ஞானம் என்ற பெயர்களாலேயே அழைக்கத்தக்கவர்
737. ஹயமஹிவிஹவ: — இடையறாத ஆனந்த மூர்த்தியானவர்
738. மெஹிவிஹவ: — ஸோஹம் (அதாவது) சிவனே நான் என்பதை (மஹா)வாக்யமான செல்வமாகக் கொண்டவர்
739. புஹாஹிவிஹவ: — (ஏழாவது) உள்ளிருக்கும் ஆம்னாயத்தை அறிந்தவர்
740. நிரஹிவிஹவ: — (ஸம்ஸார) தோஷங்களற்ற ஈஸ்வரனை வழிபடுபவர்
741. மீகர: — செல்வத்தை உண்டு செய்பவர்
742. மஹிவிஹவ: — சம்பிரதாயங்களை (வகுத்தளித்தமையால்) தாங்கியவர்
743. விஹிவிஹவ: — வித்யையை (ஸக்தியாகக் கொண்ட) பீடத்தின் மஹா யோகி
744. பரமஹிவிஹவ: — பரமாத்மாவையே (பீடத்தின்) மடமாக ஆஸ்ரயித்தவர்
745. த்ரிபுரீதிஹிவிஹவ: — (அறிவு அறிபவன் அறியப்படுவது என்னும்) த்ரிபுடியே (பீடத்தின்) தீர்த்தமாகக் கொண்டு அதில் நீராடியவர்
746. யோகஹிவிஹவ: — யோகத்தையே (பீடத்தின்) க்ஷேத்ரமாகக் கொண்டு அதனை ப்ரகாஸிக்க வைக்கும்) ஸூர்யனானவர்
747. மீவிஹிவிஹவ: — ஸ்ரீவித்யையை (பீடத்தின்) ஸக்தியாகக் கொண்டு ஜபத்தினால் (உபாஸித்தவர்)
748. மஹி — மந்த்ரங்களின் (இருப்பிடமானவர்)
749. மஹிவிஹவ: — (தன்னில்) சந்தோஷித்து இருப்பதையே ஸம்ப்ரதாயமாகக் கொண்டவர்

750. परम्भपरिष्ठा — பரமஹம்ஸ (நிலையையே ஈஸ்வர ஸ்வரூபமாகக் கொண்ட அத்தகைய நான்காம் நிலையிலுள்ள) ஸந்ந்யாஸி
751. मीमिक्षापूर्वप्रदृष्ट — பொலிவுடன் தன்னில் நிலைபெற்ற ப்ரஹ்மசர்யத்தைக் கொண்டவர்
752. भद्रकैकभन्वातुः — (ஐம்பது) மாத்ருகா வர்ணங்களையும் ஒரே மஹாவாக்ய வடிவில் (பார்ப்பவர்)
753. वैश्वः — உடலைப் பார்க்கும் ஸாக்ஷி சைதந்ய வடிவமான (ஆம்னாய பீடாதிபதியானவர்)
754. मरुतः परः — (உலகில்) அழியாதவை (என்று ப்ரஸித்தமானவற்றைக்) காட்டிலும் பெரியவர்
755. निष्कलभयनिरुः — (எட்டாவது) நிஷ்கல ஆம்னாயத்தில் நிலைபெற்றவர்
756. मरिन्द्रियुः — சாந்தமும் பொறுமையும் உடையவர்
757. मित्रिः — சைதன்யத்தையே (சக்தியாகக் கொண்டவர்)
758. मन्त्रपीम्बविष् — ஆனந்த பீடத்தில் உறைந்தவர்
759. भद्रदुष्टिपदम्यः — சுய அனுபவமே கேஷத்ரமாகக் கொண்டவர்
760. मूलभैरुमिनिः — (ஸாஸ்த்ரத்தில்) நம்பிக்கையாலும் (மற்றவர்களிடத்தில்) நட்பாலும் அறியத்தக்க (சொருபத்தினர்)
761. मस्त्रिभम्भम्यः — ஸச்சித் (ஸ்வரூபமே) மடமாகக் கொண்டவர்
762. मरुप्रीतुः — ஆகாயமே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்
763. मरुद्वी — ஆகாயம் (போன்று ஸூக்ஷ்மமாக உள்ள பரம்பொருளைப்) பார்த்தவர்
764. मरुः — ஆகாயம் (முதலிய சொற்களால் உபநிஷத்துகளில் சொல்லப்பட்ட பரம்பொருளானவர்)
765. मिश्रित्तिमित्रुः — சைதன்யம் மற்றும் அதன் ஸக்தி இவற்றை சிந்திப்பவர்
766. पूर्वपूर्वी — ப்ரணவத்தில் அமிழ்ந்தவர்

767. ௩௩ — (தமது குருமார்கள் விஷயத்தில்) வணங்கிய (உடலுறுப்புகளைக்) கொண்டவர்
768. ௩௩௩௩௩௩ — நந்த கோப குமாரனை பூஜித்தவர்
769. ௩௩ — (தன்னைக் காட்டிலும் பெரியது இல்லாத) பெரும்பொருளானவர்
770. ௩௩௩௩௩ — பிரமானந்தம் என்ற பெயர் கொண்ட (ஸ்வரூபத்தினர்)
771. ௩௩௩ — (ஸாக்ஷி ஸ்வரூபமாக) மாறாமல் உள்ளுறைபவர்
772. ௩௩௩ — அழிவில்லாதவர்
773. ௩௩௩ — (பக்தர்களின்) விருப்பத்தை நிறைவேற்றுபவர்
774. ௩௩௩௩௩௩ — உள்ளும் வெளியும் தனித்தனியாக இல்லாதவர்
775. ௩௩௩ — அனைத்திலும் உயிராக உறைபவர்
776. ௩௩௩ — பகுதிகளற்றவர்
777. ௩௩ — (மாயையால்) பல (வடிவமாகத் தோன்றுபவர்)
778. ௩௩௩ — ஸரீரத்தில் வீற்றிருக்கும் (ஆத்ம ஸ்வரூபமானவர்)
779. ௩௩௩ — ஸம்ருத்தியுடையவர்
780. ௩௩ — நிறைவானவர்
781. ௩௩௩ — இருப்பாக இருப்பவர்
782. ௩௩௩ — பழமை காலமுதலே இருப்பவர்
783. ௩௩௩ — நுகர்வை (ஸத்விஷயத்தில் கட்டுப்படுத்தும்) யோகத்தை அளிப்பவர்
784. ௩௩௩ — யோகத்தையே தன் நுகரும் பொருளாக ஆக்கியவர்
785. ௩௩௩ — உலகங்களில் உள்ளுறைபவர்
786. ௩௩௩ — (விரும்பத்தக்க ஒரே பொருளாகையால்) வனம் (எனப்படும்) ப்ரஹ்மத்தில் ஸஞ்சரிப்பவர்)

787. துதிதா — (ஸத்கார்யங்களை செய்வதற்கு வேண்டிய) செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
788. துதித: — (அத்தகைய) செல்வத்தை (அத்தகைய காரியங்களுக்காக நமக்கு) தருபவர்
789. துதி: — எங்கும் வ்யாபித்திருப்பவர்
790. துதிம: — (பக்தர்களுக்கு அருள) பலவிடங்களில் உறைபவர்
791. துதிதா: — இறைவனின் ஸ்ருஷ்டியை ரசிப்பவர்
792. துதிதா — (உலகத்திற்கு கேஷமம் ஏற்படும் வகையில் காஞ்சீபுரத்தில்) ஸ்ரீசக்ரத்தை ஸ்தாபித்தவர்
793. துதிதா: — (அங்கு) ஸ்ரீசக்ர பூஜை அர்ச்சனை சம்பிரதாயத்தை செயல்படுத்தியவர்
794. துதிதா: — பாம்புகளை அணிகலன்களாக்கிக் கொண்ட (சிவனார்) வடிவினர்
795. துதிதா: — (சிவனார் வடிவில்) விஷ்ணுவினால் ஸேவிக்கப்பட்டவர்
796. துதிதா: — சக்ரவர்த்திகளின் தலையணிகளில் அங்கமான நககாந்தியைக் கொண்டவர்
797. துதிதா: — ஏழை அந்தண பெண்மணியின் வீட்டில் உள்ள (மண்) கலயங்கள் அனைத்தும் தங்கமாக்கியவர்
798. துதிதா: — (யுக்தியால்) சாதுர்யமிக்கதும் (கருணையால்) பெருந்தன்மை மிக்கதும் (பொருளினால்) கம்பீரம் மிக்கதுமான வாக்யங்களால் வாதம் செய்பவர்
799. துதித: — பயணித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
800. துதிதா: — பிறைகுடி வடிவினர்
801. துதிதா: — சம்பங்கி (மொட்டை) விட (அழகிய) மூக்கை உடையவர்
802. துதிதா: — பூமியெங்கும் ஸஞ்சரிக்கும் பலவித மதங்களை மிச்சமின்றி விசாரித்து (பதிலளித்தவர்)

803. மாலிதௌதவிஹ: — அத்வைத ஞானத்தை (எங்கும்) ப்ரச்சாரம் செய்தவர்
804. மர: — (பக்தர்களுக்கு அருள ஆங்காங்கு) ஸஞ்சரித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
805. மிதீ — பலவித (திறன்கள்) கொண்டவர்
806. மிதபூ: — சிதாகாஸ வடிவினர்
807. மிரூபதூதபூமபிரதூபபூமபிக: — ஸத்யவ்ரத ஸ்தானம் (எனும் காஞ்சியில்) சுகமாக வெகுகாலம் தங்கியவர்
808. மூலிதௌதவிஹ: — மாணவர்களின் ஹ்ருதயத்தில் இருக்கும் சிக்கல்களை சூர்ணமாக்கியவர்
809. மூலபூதபூமபூத — துஷ்டர்களின் வாய்களை மண்ணைக் கவ்வச் செய்பவர்
810. பூதபூதபூத: — ஸ்தாபனங்கள் ஏற்படுத்தியவர்களில் தலைச்சிறந்தவர்
811. பூதபூதபூத: — பெரும் புகழை நிலைநிறுத்தியவர்
812. பூதபூதபூதபூதபூதபூத: — பெரிய (பௌத்தர்களான) விஞ்ஞானவாதிகளின் கர்வத்தை முழுவதும் தேய்ப்பதற்காக வந்தவர்
813. பூதபூதபூதபூத — பூமியில் இருப்போர்கள் அனைவருக்கும் (நித்ய) மகிழ்ச்சியை (அளிக்கவல்ல நன்மையை உபதேசித்தவர்)
814. பூதபூதபூதபூத — துறவிகளுக்கான தர்மத்தை ஆராய்ந்தவர்/நேராக காட்டியவர்
815. பூதபூதபூதபூத — ஆன்மிகத்தின் உண்மையைக் காட்டியவர்
816. பூதபூதபூதபூத: — அறிஞர் கூட்டத்தால் நாடப்பட்டவர்
817. பூதபூதபூதபூதபூதபூதபூத: — நதி, நதம், ஏரி (முதலான) நீர்நிலைகளில் முங்கி நீராடி தூய்மை பெற்ற உடலினர் (உண்மையில் அவற்றை தூய்மைப்படுத்தியவர்)

818. பரிஃதஃதஃபரிஃதஃபரிஃதஃ — (கர்வமுள்ள) பண்டிதர்கள் கூட்டத்தின் பாண்டித்யத்தை கவ்வவல்ல சொற்கள் கொண்டவர்
819. தஃதஃதஃதஃ — தத் பதத்தின் பொருளை பிரகடனப்படுத்தியவர்
820. தஃதஃதஃதஃ — த்வம் பதத்தின் பொருளை விளங்கச் செய்பவர்
821. திஃதஃதஃ — எப்போதும் ஆனந்தமாக இருப்பவர்
822. திரஃதஃ — (சுதந்திரமாய்) எதையும் சாராமல் இருப்பவர்
823. திரஃதஃ — புலன்களுக்கு அப்பாற்பட்டவர்
824. திரிபஃதஃ — எல்லாவற்றையும் (ஸாக்ஷி பாவத்துடன்) பார்ப்பவர்
825. திஃதஃ — அழிவற்ற ஞானம் உடையவர்
826. திஃதஃதஃ — நித்யத்தையே (அடைய வேண்டும் என்ற) ஸங்கல்பம் கொண்டவர்
827. திரிஃதஃ — (மோக்ஷம் எனும்) பொக்கிஷத்தில் நின்றவர்
828. திரிஃதஃ — அவித்யை அற்றவர்
829. திஃதஃ — நித்யமாகிய (பரம்பொருளில்) வசிப்பவர்
830. திஃதஃ — எப்போதும் தூய்மையாக இருப்பவர்
831. திஃதஃ — பேராசை இல்லாதவர்
832. திரிஃதஃ — வேத விரோதிகளை ஒழிப்பவர்
833. திரிஃதஃ — (ஸம்ஸார) தோஷங்கள் அற்றவர்
834. திஃதஃ — எப்போதும் வணங்கத்தக்கவர்
835. திஃதஃ — எப்போதும் விடுதலையானவர் (ஸம்ஸார பந்தமே இல்லாதவர்)
836. திரிஃதஃ — (தனக்கு) தலைவன் இல்லாதவர்
837. திஃதஃ — (தன்னை) உருவாக்கியவன் அற்றவர்
838. திஃதஃ — எதையும் சேர்த்துக்கொள்ளாதவர்
839. திஃதஃ — தனது என்று ஒன்றுமில்லாதவர்

840. திஃ — தங்கக்காசு (போன்றவர்)
841. திதிபலவஃ — அனைத்தும் வசிக்கும் இருப்பிடமானவர்
842. துரிமஃ — (தேஹமாகிய) கோட்டையில் உறைபவர்
843. துரஃ — (அனைவருக்கும்) முன் செல்பவர்
844. துஃ — புண்யமானவர்
845. துரஃ — முன்னோர்களை வணங்குபவர்
846. துரஃ — பலருக்கும் பிரியமானவர்
847. திஃ — கொண்டாடப்படும் வீரம் மிக்கவர்
848. திஃ — வித்யைகளுக்கெல்லாம் அதிபதி
849. திஃ — ஸ்ரீவித்யையின் ஷோடஸி மந்த்ரத்துக்கு குரு
850. திஃ — (அனைவராலும்) அடையாளம் காணப்பெறுபவர்
851. திஃ — (வேத வாக்யங்களால் நேரடியாக தெரிவிக்கவியலாமல்) மறைமுகமாக தெரிவிக்கப்படுபவர்
852. திஃ — (ஸுபமான) அங்க லக்ஷணங்களை உடையவர்
853. திஃ — லக்ஷணங்களை அறிந்தவர்
854. திஃ — ஒளிரும் ஸ்தானம் கொண்டவர்
855. திஃ — அடக்கமானவர்
856. திஃ — அன்னம் போன்ற (அழகுற) நகருபவர்
857. திஃ — அன்னம் (போல் நித்யாநித்யங்களை பிரிக்கத்தெரிந்தவர்)
858. திஃ — அன்னம் போன்ற வெண்ணிற இதயத்தாமரை கொண்டவர்
859. திஃ — ஹம்ஸ என்னும் மந்திரத்தின் தத்துவ பொருளை அறிந்தவர்
860. திஃ — ஸுரீயன் போன்ற நிறத்தினர்

861. रुरिपिथः — ஹரிக்கு பிரியமானவர்
862. रुद्धभट्टभट्टः — மகிழ்ச்சியும் கோபத்தையும் சகித்துக்கொள்பவர்
863. रुभक्तुमलः — (உள்ளிருக்கும் ஆனந்தத்தால்) சிரித்துக்கொண்டு சுகமாய் இருப்பவர்
864. रुनिवृष्टिः — மிகுவது குறைவது (இரண்டையும்) தள்ளிய (பரம்பொருளானவர்)
865. भट्टः — ஸபையில் முன்னிற்பவர்
866. भट्टपतिः — ஸபைக்கு தலைவர்
867. भूमी — (அனைத்திற்கும்) உரிமையாளர்
868. भृतिः — (சேவை செய்பவர்களுக்கு அனுக்ரஹமாகிய) நல்ல ஊதியம் அளிப்பவர்
869. भृष्टपुरुः — (மீண்டும் மீண்டும்) பிறப்பதன் (அவசியத்தை) தவிர்ப்பவர்
870. स्निवेशीउलभृशुः — விளாமிச்சை வேர் போல் குளிர்ச்சியாகவும் (வாசனையாகவும் உள்ள) மனதைக் கொண்டவர்
871. स्निग्धीरुतिउद्धृक्का — லஜ்ஜையுடவளாகிய (அம்பாளால் ஆனால் தைரியமாக) அபஹரிக்கப்பட்ட (பாதி) உடலைக் கொண்டவர்
872. लब्धुमेधभृशुः — அனைத்து மந்த்ரங்களின் லக்ஷ்ய அர்த்தங்களையும் (அறிந்தவர்)
873. लक्ष्केष्टुशायकः — லக்ஷம் கோடி ப்ரம்மாண்டங்களுக்கு நாயகன்
874. ललिउङ्गः — லளிதமான உடலைக் கொண்டவர்
875. लयल्लु — (பிரம்மத்துடன்) லயத்தை அறிந்தவர்
876. लक्ष्मः — தன்னை அடைந்தவர்
877. लक्ष्मः — கிடைத்த (தன் சொருபமான ஆனந்தத்தில்) களித்திருப்பவர்
878. कभृकः — சங்கு போன்ற கழுத்துடையவர்
879. कलिपुंभी — கலியை துவம்சம் செய்பவர்

880. कलृ॒ण॑ — மங்களங்களில் உள்ளுறைபவர்
881. कल॒श॑निः — அழகிய குரலுடையவர்
882. रु॒षि॒उ॒च॒वा॒नि॒म॑तः — பண்டிதர்களின் கூட்டத்தை அலங்கரிப்பவர்
883. रु॒गः — பூமியில் அவதரித்தவர்
884. रु॒भ॒र॒म॑वि॒तः — பூமியில் வாழும் தேவர்களால் (அந்தணர்களால்) வணங்கப்பட்டவர்
885. य॒ग॒वि॒त॑ — யாகங்களை அறிந்தவர்
886. यै॒ग॒वि॒त॑ — யோகத்தை அறிந்தவர்
887. य॒तुः — காரியங்களில் தானே ஈடுபட்டவர்
888. य॒मै॒तः — புகழை அளிப்பவர்
889. य॒भ॒पि॒यः — சுய கட்டுப்பாட்டை விரும்புபவர்
890. उ॒ङ्क॒र॒वृ॒रु॒डि॒वृ॒गः — ஓங்காரம் வியாஹ்ருதிகள் இவற்றில் இருந்து எண்ணங்களை நீக்காதவர்
891. न॒भि॒उ॒र॒डि॒भ॒ण॑तः — எதிரிக்கூட்டத்தை (வாதில் வென்று) வணங்கச்செய்தவர்
892. न॒ग॒मै॒ल॒मि॒र॒ञ्ज॒री — நாக பர்வதத்தின் உச்சியில் ஸஞ்சரித்தவர்
893. र॒भ॒गि॒ट॒म्भ॒म॒यः — ராமகிரி ஆம்ரமத்தை ஆம்ரயித்தவர்
894. व॒दि॒छ॒उ॒रु॒प॒तः — வேண்டிய செல்வத்தைத் தருபவர்
895. म॒वः — (உலகை தன்னுள் லயமாகும்படி) ஸம்ஹரிப்பவர்
896. म॒पी॒नः — ஏக்கமற்றவர்
897. भे॒ट॒भे॒ट॒तः — மகிழ்ச்சியில் களித்தவர்
898. य॒दि॒ग॒ट॒वि॒वै॒क॒णः — யதிகளின் நடத்தையை ஆராய்ந்து அறிந்தவர்
899. य॒उ॒पीः — (விசாரங்களில்) புத்தியைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
900. य॒उ॒रु॒व॒नः — (வ்யவஹாரங்களில் மனோ)பாவத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
901. उ॒ङ्क॒री — ஓங்காரத்தையே (எப்பொழுதும் த்யானத்தில்) கொண்டவர்

902. विउउच्चैउमृउचः — அத்வைதத்தைக் (காட்டும்) வேத (வாக்யங்களையும்) ந்யாயங்களையும் விவரித்தவர்
903. कृपाविधिः — கருணைக்களஞ்சியம்
904. यज्ञ — நிர்வஹிப்பவர்
905. यउभनः — மனதைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
906. यभृः — (பக்திக்கு) கட்டுப்படுபவர்
907. यल्लङ्गः — யஜ்ஞங்களை உறுப்புகளாகக் கொண்டவர்
908. यल्लुधम् — யஜ்ஞத்துக்கு ஆபரணம் போன்றவர்
909. यल्लः — யஜ்ஞ (ஸ்வரூபி)
910. यल्लपतिः — யஜ்ஞங்களுக்குத் தலைவர்
911. यल्ल — யஜமான (ஸ்வரூபியானவர்)
912. यल्लुः — யஜ்ஞங்களின் ஆதாரம்
913. यल्लवतः — யஜ்ஞங்களை நடத்துவிப்பவர்
914. कृपाविउकरलभुः — கருணை கைகொடுத்து தூக்கிவிடுபவர்
915. विषुविधिः — விதியை மாற்றவல்லவர்
916. यल्लुः — ப்ரஹ்மாண்டத்தை உருவாக்கவல்லவர்
917. निपिलकुउलमादः — பூமி முழுதுக்கும் ஆசார்யனானவர்
918. पाधलभउपलः — போலி தத்துவங்களை உடைய மதங்களை கண்டித்தவர்
919. पृष्ठपकभृः — உயர்ந்தவற்றை (தத்துவங்களை) நிலை பெறச்செய்தவர்
920. भउधयभनयः — அத்வைதம் என்ற பெரும்பாதையை (வேதத்தின் கருத்தாக) தீர்மானித்தவர்
921. परिबलकपृवैल — துறவிகளுள் முன்னிற்பவர்
922. यनृपः — அளவற்ற (உலகை) முன்நடத்துபவர்
923. यनृपः — உள்ளுக்குள் உள்ளே (இருப்பவர்)

924. ழு: — (ஸம்ஸாரத் தளைகளிலிருந்து) விடுபட்டவர்
925. ழு: — கொண்டாடப்படும் புனிதர்
926. ழு: — சார்பில்லாமல் (தீர்ப்பு அளிப்பவர்)
927. ழு: — செருக்கிலிருந்து தூர (விலகியவர்)
928. ழைமய: — (பக்தர்கள்) மனத்தில் (உள்ள த்யான) வடிவானவர்
929. ழு: — (உலகமே) அடங்கிய (நிலையிலுள்ளவர்)
930. ழு: — மங்களம் செய்பவர்
931. ழு: — தூயவர்
932. ழு: — (தர்மத்தைக் காப்பாற்றுவதில்) சூரர்
933. ழைவர: — சோகம் சிறிதும் அற்றவர்
934. ழு: — துறவி வடிவினர்
935. ழு: — (ஞானத்திற்கான) பாதையை செதுக்கியவர்
936. ழு: — பொறுமைசாலி
937. ழு: — (வாதங்களில்) காயமடையாதவர்
938. ழு: — அக்ஷதைகளுடன் கூடி அர்ச்சனை செய்பவர்/செய்யப்படுபவர்
939. ழு: — அரசர்களுக்கெல்லாம் அரசர்களால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
940. ழு: — ரஸிக்கவைக்கக்கூடியவர்
941. ழு: — ரஸிக்கவைப்பவர்
942. ழு: — ஒளி வீசுபவர்
943. ழு: — மகிழ்பவர்
944. ழு: — மகிழ்விப்பவர்
945. ழு: — ரஸவாதம் தெரிந்தவர்
946. ழு: — வெள்ளி(ப்பனி) மலையில் வசிப்பவர்

947. ஃ௩௩: — தூலமாக இல்லாதவர்
948. ஃ௩௩: — அணுவாக இல்லாதவர்
949. ஃ௩: — (கட்டைவிரல் அளவு) குட்டையான (ஜீவ சொருபமானவர்)
950. ஃ௩: — மந்த்ர வடிவினர்
951. ஃ௩ — ஞாபக ஸக்தி வடிவினர்
952. ஃ௩ஃ௩: — விசாலமான மனம் உடையவர்
953. ஃ௩௩: — வெகு தூரம் நடந்து பயணித்தவர் / (விஸ்வருபத்தில்) பல கால்கள் உடையவர்
954. ஃ௩௩: — (விஸ்வருபத்தில்) பல தோள்கள் உள்ளவர்
955. ஃ௩௩: — (விஸ்வருபத்தில்) பல தலைகள் உள்ளவர்
956. ஃ௩௩: — பலர் அன்புக்கும் உரியவர்
957. ஃ௩௩: — (ஸ்வப்னத்தைப் போல்) உள்பொருளைப் பார்க்காதவர்
958. ஃ௩: — (அனைத்துப் பொருள்களையும் ஒருசேர) பார்க்காதவர்
959. ஃ௩௩: — (விழிப்பைப் போல்) வெளிப்பொருளைப் பார்க்காதவர்
960. ஃ௩: — சைதன்யமற்று இல்லாதவர்
961. ஃ௩௩: — திரண்ட அறிவு வடிவினர் (அறிவு தவிர வேறெதுவுமில்லாதவர்)
962. ஃ௩௩ — ஸரீரத்திற்குள் இருந்து விஷயங்களை அறியும் விஞ்ஞான வடிவினர்
963. ஃ௩௩ — (அத்தகைய விஞ்ஞானங்களிலேயே) ஒளிர்பவர்
964. ஃ௩௩௩௩: — பிடித்தது பிடிக்காதது என்னும் உணர்வுகளால் பாதிக்கப்படாதவர்
965. ஃ௩: — அழிவில்லாதவர்
966. ஃ௩௩௩௩ — ஆகாஸத்தையே உடலாகக் (கொண்டு உள்ளுறைபவர்)
967. ஃ௩௩: — நிலம் அல்லாதவர்

968. ஸ௩௩: — நீர் அல்லாதவர்
969. ஸ௩௩: — நெருப்பு அல்லாதவர்
970. ஸ௩௩: — வளி (காற்று) அல்லாதவர்
971. ஸ௩௩: — வெளி (ஆகாயம்) அல்லாதவர்
972. ஸ௩௩: — (கர்ம இந்த்ரியங்களால்) பிடிக்க இயலாதவர்
973. ஸ௩௩: — (ஞான இந்த்ரியங்களால்) காண முடியாதவர்
974. ஸ௩௩ — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) கேட்காதவர்
975. ஸ௩௩ — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) கேட்பவர்
976. ஸ௩௩ — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) செய்பவர்
977. ஸ௩௩: — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) செய்யாதவர்
978. ஸ௩௩: — (உண்மையில்) மணமற்றவர்
979. ஸ௩௩: — சுவையில்லாதவர்
980. ஸ௩௩: — உருவில்லாதவர்
981. ஸ௩௩: — தொட இயலாதவர்
982. ஸ௩௩: — ஒலியற்றவர்
983. ஸ௩௩௩ — (வேத) ஸப்தங்களை (தன்னைத் தெரிவிப்பவையாகக்) கொண்டவர்
984. ஸ௩௩ — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) நினைப்பவர்
985. ஸ௩௩ — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) நினைக்காதவர்
986. ஸ௩௩௩ — (மனம் விஷயங்களை நினைக்கையில் அதற்குள் இருப்பதால்) அதனை ஒட்டி பார்ப்பவர்
987. ஸ௩௩ — (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) தீர்மானிப்பவர்
988. ஸ௩௩ — (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) தீர்மானிக்காதவர்
989. ஸ௩௩௩ — (ஆத்மாவை அறிய வேண்டும் என்ற) விழிப்பூட்டுபவர்

990. ஈ௧: — (உண்மையில்) ஒன்றாக உள்ளவர்
991. ஃ௩௧: — (உலக நடப்பில்) பலதாக உள்ளவர்
992. க௩௩௩ — (வெளி தொடர்பற்ற) தனி ஆத்மாவானவர்
993. ம௩: — எல்லாமும் ஆனவர்
994. ம்ம௩௩௩௩: — ஸம்ஸாரத்தில் இருந்து விடுவிப்பவர்
995. நி௩௩௩: — எப்போதும் சுத்தர் ???
996. நி௩௩௩: — எப்போதும் நல்லறிவானவர் ??
997. நி௩௩௩: — எப்போதும் முத்தர் ஆனவர் ?
998. நி௩௩௩: — (தனக்கு) புகலிடம் (தேவை) இல்லாதவர்
999. ஈ௩௩௩௩௩௩௩ — ஹ்ருதயத்தில் உள்ள அவித்யை என்னும் இருளை வெட்டுபவர்
1000. ஈ௩௩௩௩௩௩௩: — பக்தர்களின் இதயத் தாமரையில் சூரியனானவர்

